शैलसूत्र

जनवरी-मार्च 2023 ISSN 24558966, पत्रिका पंजीकरण संख्या TELHIN/2008/30044

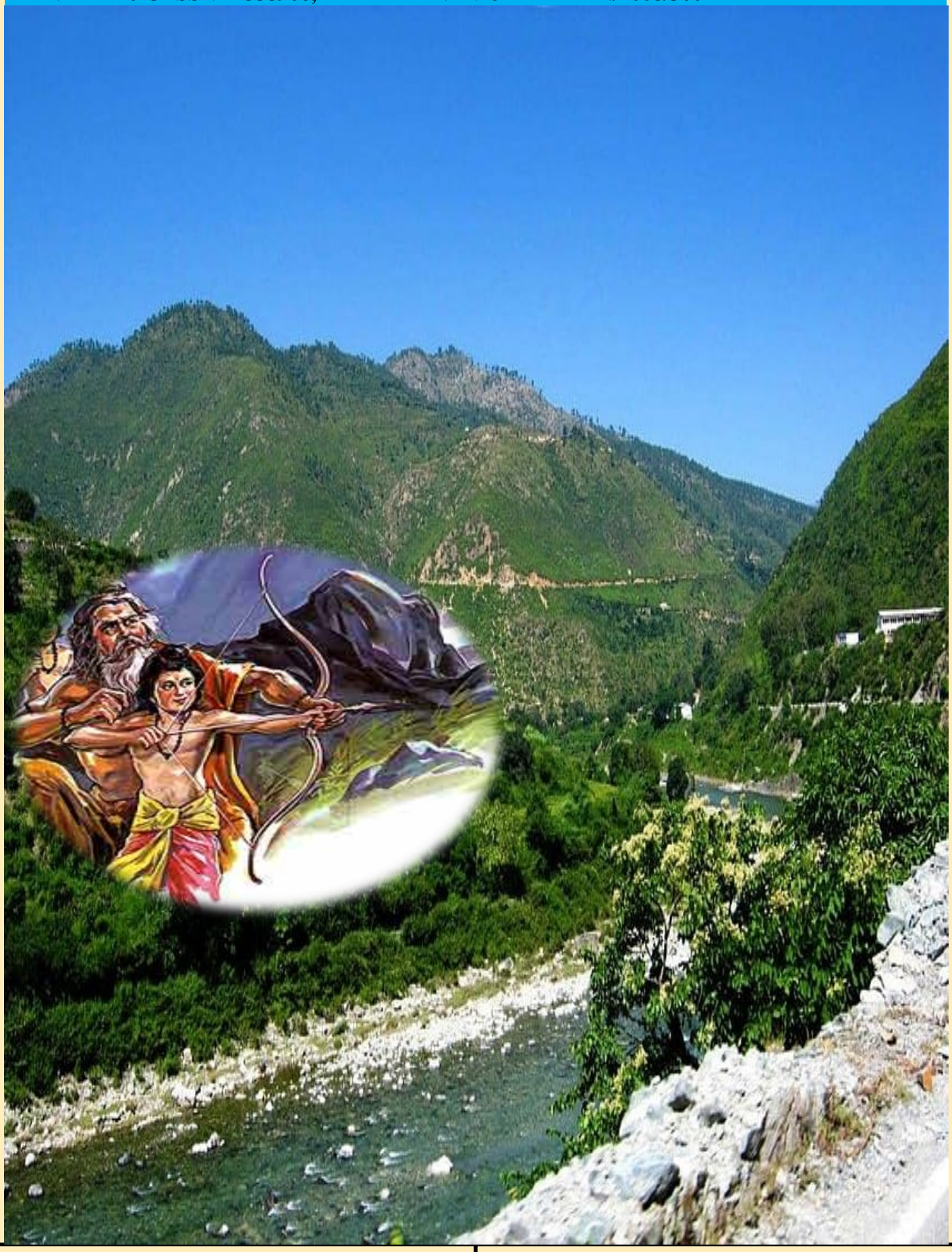

❖वर्ष-सोलह ❖ अंक-1 ❖ ❖ जनवरी-मार्च 2023 ❖

सम्पादन परामर्श
डॉ. प्रभा पंत-09411196868
सम्पादक
आशा शैली -9456717150, 8958110859 7055336168,
सह सम्पादक/समन्वयक
चन्द्रभूषण तिवारी -9415593108/8707467102
सह सम्पादक/शोध प्रबंधक
डॉ. विजय पुरी-09816181836
पवन चौहान-09805402242
विधि-परामर्श
प्रदीप लोहनी-09012417688
प्रचार सचिव
डॉ. विपिन लता 9897732259

1.शैल-सूत्र में प्रकाशित रचनाओं के प्रति सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
2.लेखक अपने विचार प्रेषण के लिए स्वतन्त्र है।
3. शैलसूत्र परिवार के सभी सदस्यों के पद अवैतनिक हैं।
4.प्रत्येक कानूनी विवाद का निपटारा पत्रिका के सम्पादकीय कार्यालय का विधि क्षेत्र होगा।

पत्रिका का शुल्क, खाता सं 024110100000073, कोड सं. IFSC; AUCB 0000025 अल्मोड़ा अर्बन बैंक, शाखा लालकुआँ अथवा भारतीय स्टेट बैंक शाखा तरुवाला, पाँवटा साहब (हि.प्र.) कोड सं. IFSC; SBIN 0000703 खाता सं 30116574461 में जमा करायें।

मूल्य-एक प्रति 25/-,
वार्षिक 100/-,
आजीवन 1000/-,
संरक्षक सदस्य 5100/-

परामर्श:-

डॉ. श्यामसिंह 'शशि' -09818202120,
डॉ. धनंजय सिंह -09810685549,
डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक', 07906360576

मुख्य संरक्षक :- डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र-09412992244/7060004706
संरक्षक **सदस्य**:- शिव बाबू मिश्र -09412750094, अर्श अमृतसरी -07011758133, डॉ. नवीन कुमार श्रीवास्तव -9212444369, प्रकाश चन्द्र लोशाली -9456114762, डॉ. शीना 9249932945, राजकुमार जैन 'राजन' 09828219919, केशव कुमार पटेल-9919352975, डॉ. विमला व्यास-9452780735, डॉ. शीला त्रिपाठी-9453257279, बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव -9451023854, अरविंद कुमार यादव -9125628814, श्रीमती ममता पाण्डेय-9453770833, मौजी लाल पटेल-9936380977, ए.के. पवार-9810059715, डॉ. ए.जे. अब्राहम- 9447375381, **डॉ. श्रीमती उषा मिश्रा-9450610608, श्री चंदन प्रताप सिंह -7317559999, श्री सर्वेश सिंह शौनक-7007164024, श्री रूप चन्द शर्मा -9935353480,** राम मूरत चौहान-**9415885622,** डॉ. नीतिका नैन -9536379106, राकेश कुमार कुशवाहा -8318525500, हिमांशु कुमार तिवारी-9335183600, मनोज कुमार मिश्र-9935422927, संजीव कुमार मिश्र-9340581505, वीरेंद्र कुमार मिश्र-8287985767

विशेष सहयोगी

पंकज बत्रा -9897142223, सत्यपाल सिंह 'सजग' -09412329561, राधेश्याम यादव -80066722221, (लालकुआँ), निरुपमा अग्रवाल -9412463533, निर्मला सिंह -9412821608, (बरेली), दर्शन 'बेज़ार'-आगरा -9760190692, डॉ. राकेश चक्र -9456201857, (मुरादाबाद), सूरत भारती, (हि.प्र.) -09418272934, कृष्णचन्द्र महादेविया, (मण्डी हि.प्र.) -09857083213, डॉ. वेदप्रकाश प्रजापति 'अंकुर' (हल्द्वानी) -9412943042,

सम्पादकीय कार्यालय एवं पत्र व्यवहार का पता-
-साहित्य सदन, इन्दिरानगर-2
पो.-लालकुआँ, जिला-नैनीताल (उत्तराखण्ड) पिन-262402
मो.-09456717150, 7055336168,
Email-ashashaili@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, तथा मुद्रक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल) ने एच.जे. इंटरप्राइजेज़, खानचन्द मार्केट, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित कराया। सम्पादक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल-262402)

विधा	लेखक	पृष्ठ
सम्पादकीय		
धरोहर:		
विश्व की पहली कविता का पहला पुरस्कार	डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र	05
आदिकवि वाल्मीकि और उनका अमर साहित्य	आशा शैली	08
आलेख जगरानी का चन्दू कैसे बना शहीद शिरोमणि.....	डॉ. उमेश प्रताप वत्स	12
कहानी:- आई बाढ़ गई	स्नेह गोस्वामी	15
: शैल-चन्द्रा	डॉ सुधा जगदीश गुप्ता	19
लघुकथा:- सुनो राजा भोज	डॉ दिनेश पाठक 'शशि'	23
वह दस वर्श का लड़का	रमेश चन्द्र	24
यात्रा वृत्त:-		
हरसिल गाँव और महापंडित राहुल की कुटिया	श्रीमती संतोष बंसल	26
संस्मरण मखमली अहसास	प्रो. नव संगीत सिंह	33
काव्यधारा:-		
पिता और बच्चा विलियम बटलर	(अनुवाद डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक')	25
-होली-	राजेश्वरी जोशी	34
गीत: हरियाली की भस्म लगाकर/सूरज है नाराज	शिवमोहन सिंह	35
कविता-कुछ शब्द अनकहे	राजकुमार जैन 'राजन'	36
औलाद -शुचि 'भवि', पेड़ जरूरी है	-अभिषेक जैन	37
माँ हारती नहीं -अंजना छलोत्रे 'सवि', आज का दौर-स्नेह लता नेगी		38
रमेश डउवाल की दो ग़ज़लें		39
शोध:-		
मणिपुर के नुपी लाल (नारी संघर्ष) में हिजम इराबत का योगदान-डॉ. येंखोम हेमोलता देवी		40
समीक्षा:- दस्तक देते रहना	-डॉ वसंती मठपाल	44
अनूठी कहानियाँ 'और कितनी परीक्षा'	-प्रो. अवध किशोर	47

क्षेत्रीय सहयोगी

1- Dr. L.C. Sharma, IIRD Complex,
Bye-pass Road, shanan,
Sanjauli, Shimla-6 (H. P.)
mo. 09418014761
iirdsml@gmail.com

2. अंजना छलोत्रे 'सवि',
द्वारा श्री विजय देशमुख, माधव कालोनी,
सोडलपुर रोड, टिमरनी, जिला हरदा -461228
(म.प्र.) मो. 08461912125
anjana.savi@gmail.com

3. श्री कृष्ण चन्द्र महादेविया
गाँव महादेव, तह. सुन्दर नगर,
मण्डी (हि.प्र.) 175018

4. डॉ. विजय पुरी,
ग्राम पदरा, डा. हंगलोह, त. पालमपुर, कांगड़ा (हि.
प्र.) 7018516119, 9816181836

5-श्रीमती शिवा धरावेश,
20/7, दुर्गा कालोनी तरुवाला, पाँवटा साहिब,
जि. सिरमोर-173025 (हि.प्र.)
मो. 08894892999

6. चन्द्रभूषण तिवारी
ग्राम टी.टी.अब्दलपुर, डाकघर हरिसेन गंज,
(मऊआईमा) प्रयागराज-212507
मो. 9415593108, 8707467102
cbtiwari04091966@gmail.com

7. दिनेश पाठक 'शशि'
28, सारंग विहार, रिफ़ाइनरी नगर,
मथुरा- (उत्तर प्रदेश) 9412727361,
ईमेल- drdinesh57@gmail.com

8. श्रीमती पूर्णिमा ढिल्लन
फ्लैट नं.-401, बिल्डिंग-5, अशोक अस्टोरिया,
गोवर्धन विलेज, गंगापुर रोड, नासिक-422222,
मो. 7767943298

9. Dr. A. J. Abraham,
ANCHANIYIL A.K.G. Unichira road,
Changampuzha nagar, post- Kochi-33',
Kerala. mo. 9447375381

11. डॉ. परमानन्द तिवारी (प्राचार्य)
शास. तुलसी महाविद्याल अनूपपुर,
जिला अनूपपुर (म.प्र.) मो. 9424931012
Email...hegtdcano@mp.gov.in

Dr.Sheena Eapen,
House No.2, Alphonsa Meadow,
sThekkemala P.O Kozhencherry,
Pathanamthitta, Kerala-689654

फार्म नं.-4 (नियम नं.-8)

1-प्रकाशन स्थान:	लालकुआँ
2-प्रकाशन अवधि:	-त्रैमासिक
3-मुद्रक का नाम:	-आशा शैली
क्या भारत का नागरिक है	-हाँ
4-प्रकाशक का नाम	-आशा शैली
क्या भारत का नागरिक है	-हाँ
5-पता:	कार रोड, बिन्दुखत्ता, पो. लालकुआँ, जिला नैनीताल-262402 (उ.ख.)
6-सम्पादक का नाम:	-आशा शैली
क्या भारत का नागरिक है	-हाँ
पता:	कार रोड, बिन्दुखत्ता, पो. लालकुआँ, जिला नैनीताल-262402 (उ.ख.)

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों।

-आशा शैली
कार रोड, बिन्दुखत्ता, पो.
लालकुआँ, जिला
नैनीताल-262402 (उ.ख.)

मैं आशा शैली एतद् द्वारा घोषणा करती हूँ कि मेरी अंतिम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं। -आशा शैली

चैत्रे मासि महाबाहो! पुण्ये तु प्रतिपद्दिने।
यस्तत्र श्वपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः।।
न तस्य दुरितं किंञ्चित्
नाधयो व्याधयो नृप!।। (निर्णय सिन्धु, द्वितीय परिच्छेद)

सम्पादकीय

यौवन की दहलीज पर

जी हाँ! बहुत खतरनाक होता है सोलहवां साल! तो हमारी पत्रिका भी इस अंक के साथ ही सोलहवें साल में प्रवेश कर चुकी है। युवावस्था की दहलीज पर पत्रिका के जीवन में भी मोड़ आया है। क्योंकि पत्रिका की जन्मदात्री उम्र की ढलान पर है सो अब से हमने पत्रिका को ई-स्वरूप में रखने का निर्णय लिया है। इसके मुख्य दो कारण हैं। एक तो धनाभाव, दूसरा डाक विभाग।

सभी विद्वान पत्रिकाओं की आर्थिक विपन्नता से परिचित हैं। ऐसे में जोड़-तोड़ करके निकाली गई पत्रिका भी जब यथा स्थान नहीं पहुँचती तब कितनी पीड़ा होती है यह सुधिजन भली प्रकार समझते हैं। साधारण डाक तो बहुत समय से हमारे डाक वाहक महोदय प्राप्त करता तक नहीं पहुँचाते, अब तो पंजीकृत डाक मिलना भी कठिन हो गया है। इसपर भी अभिजात वर्ग के परिसर में तो डाक वाहक महोदय को शायद ही किसी ने देखा हो। पत्रिका लोकप्रिय होगी तो उसके सदस्य भी बढ़ेंगे ही। ऐसा भी नहीं हो सकता कि प्रत्येक सदस्य को आप पंजीकृत डाक अथवा कोरियर से पत्रिका भेजें। अब यह कहाँ आवश्यक है कि पत्रिका अभिजात वर्ग तक ही सीमित रहे, फिर उन्हें भी तो पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है। भेजी जाय और प्राप्त करता को न मिले तो भारी कष्ट होता है।

पिछले एक वर्ष से मुझे इन्हीं कठिनाइयों से गुजरना पड़ा है। 2022 में शैलसूत्र का मलयालम अंक निकाला गया था। अहिन्दी भाषी लेखकों का भरपूर सहयोग मिला, आर्थिक भी और साहित्यिक भी। अंक बहुत सुन्दर बन गया। सभी को बहुत अच्छा लगा पर समस्या वहीं की वहीं रही। कुछ लेखकों को लेखकीय प्रति भी नहीं मिली। दोबारा भेजी गई परन्तु ढाक के तीन-पात के अनुसार नहीं मिलनी थी तो नहीं मिली। हद यह कि इस बार पंजीकृत डाक थी, पर डाक वाहक को तो नहीं करना काम तो नहीं करना। बेचारे अहिंदी भाषी लेखकों का उत्साह 'ईनो फ्रूटसाल्ट' की तरह उफनकर निकल गया। तीसरी बार भेजने पर ही लेखक को लेखकीय प्रति मिल पाई। ऐसे में विवश होकर यह निर्णय लेना पड़ा, आशा है कि मेरे प्रबुद्ध मित्र मुझे क्षमा करेंगे।

आशा शैली

विश्व की पहली कविता का पहला पुरस्कार!

-डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र

महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि कहा जाता है, क्योंकि उनसे पहले विश्व ने केवल वैदिक मंत्र सुने थे, जिन्हें अपौरुषेय कहा गया है। विद्वानों के समाज में आदिकवि के महाकाव्य को 'आर्ष रामायण' मानते हुए उसे सार्वकालिक काव्यबीज कहा गया, 'काव्यबीजं सनातनम्।' यानी विश्व की सारी कविताओं का उत्स यही है। रामायण का शाब्दिक अर्थ है 'राम का मार्ग (अयन)' जिसके जीवनादर्शों पर अनंत काल तक मानव सभ्यता चल सके और जिसके निकष पर किसी देशकाल की सभ्यता-संस्कृति को आँका जा सके। महाभारत, भागवत और 18 पुराणों के रचयिता महर्षि वेद व्यास ने 'स्कंद पुराण' में महर्षि वाल्मीकि की जीवनी बहुत श्रद्धापूर्वक लिखी है। पुराणों में यह भी चर्चा है कि यदुवंशी लोग रामायण पर आधारित नाटक खेलते थे।

'रामायणं महाकाव्यमुद्दिश्य नाटकं तम्।'

बाद में गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने 'रामचरित मानस' को लोकजीवन में उतारने के लिए काशी में रामलीला का सूत्रपात किया।

वैसे तो लोकजीवन में देवर्षि नारद को हास्य का पात्र बना दिया गया है, जिसका असर पौराणिक फिल्मों पर भी पड़ा है, लेकिन वाल्मीकीय रामायण का शुभारम्भ नारद के गुणगान से ही होता है और उसका पहला शब्द 'तप' है-

तपरूस्वाध्याय निरतं तपस्वी वाग्विदांवरम्।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुंगवम्।।

महर्षि वाल्मीकि तप और स्वाध्याय में निरत, कुशल वक्ता, मुनिपुंगव नारद से पूछते हैं कि इस समय संसार में सबसे बड़े गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी और दृढ़व्रती कौन हैं? इस पर तीनों लोकों के ज्ञाता नारद जी इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न दाशरथि राम के गुणों का वर्णन करते हुए राम का चरित वहाँ से शुरू करते हैं जहाँ राजा दशरथ अपने प्रजा-वत्सल ज्येष्ठ पुत्र राम को युवराज पद पर अभिषिक्त करना चाहते हैं और उस तैयारी को देखकर रानी कैकेयी पूर्व में दिये गये वरों का संदर्भ देते हुए राजा दशरथ से राम का वनवास और भरत का राज्याभिषेक माँगती हैं।

विवासनं च रामस्य भरतस्याभिषेचनम्।

राम का चरित्र यहीं से उभरता है, जब वे युवराज की पात्रता रखते हुए भी कैकेयी का प्रिय करने के लिए, पिता के निर्देश का पालन करते हुए वन चले जाते हैं। उसके बाद होनेवाली सारी रामकथा संक्षेप में त्रिकालदर्शी नारद महर्षि वाल्मीकि को सुनाते हैं। अंत में वे रामराज्य का वर्णन करते हुए भविष्य की रूपरेखा भी खींचते हैं कि 11 हजार वर्षों तक राज्य करने के बाद श्रीराम ब्रह्मलोक चले जाएंगे (ब्रह्मलोकं प्रयास्यति)। अभी तक वाल्मीकि केवल तपस्वी थे। देवर्षि के मुँह से सीता और राम की अलौकिक कथा सुनकर उनके भीतर

करुणा की धारा बह निकली। महामुनि नारद के प्रस्थान करने के बाद वाल्मीकि अपने शिष्य भरद्वाज से वल्कल लेकर तमसा नदी के तट की ओर स्नान करने गये। वे विशाल वन में विचर ही रहे थे कि एक मर्मान्तक घटना घटी। वहाँ क्रौंच पक्षी का एक जोड़ा प्रेमक्रीड़ा कर रहा था कि एक निष्ठुर व्याध ने वाण चलाकर नर क्रौंच को मार डाला। रक्त से लथपथ उस पक्षी के भूमि पर गिरते ही क्रौंची चीत्कार कर उठी। इस कारुणिक दृश्य से विकल होकर धर्मात्मा वाल्मीकि के मुँह से निषाद को संबोधित यह अनुष्टुप श्लोक निकल पड़ा-

''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः
शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम
वधीः काममोहितम्।।''

(अरे निषाद! तुझे कभी स्थायी शांति न मिले, क्योंकि तूने इस निरपराध काममोहित क्रौंच जोड़े में से एक को मार डाला।)

कहने को तो महर्षि कह गये, मगर बाद में उन्हें लगा कि यह तो चार चरणों में आबद्ध, बराबर अक्षरों वाला श्लोक है, जिसे वीणा पर गाया जा सकता है। स्नान कर मुनि शिष्य भरद्वाज के साथ आश्रम लौटे, संध्या वंदन के लिए आसन पर बैठ भी गये, मगर उनके मन में वह श्लोक अटका रहा। तभी अखिल सृष्टि की रचना करनेवाले, चतुर्मुख ब्रह्मा महर्षि वाल्मीकि से मिलने उनके आश्रम आये। परम विस्मित होकर महर्षि ने ब्रह्मा जी का स्वागत-सत्कार किया। जब दोनों उपयुक्त आसन पर बैठ गये, तब महर्षि ने क्रौंच-वध और उसके बाद उनके मुख से शाप रूप में निकले श्लोक की चर्चा की। तब ब्रह्मा जी ने हँसकर कहा कि मेरी प्रेरणा से ही आपकी जिह्वा पर सरस्वती श्लोक रूप में अवतरित हुई है। अभी नारद जी ने जो धीर और धर्मात्मा श्रीराम के जीवन का वर्णन आप से किया है, उसे काव्य में अभिव्यक्त करिये। ब्रह्मा जी ने श्रीराम, सीता, लक्षण और राक्षसों के सम्पूर्ण गुप्त या प्रकट वृत्तांत को जानने की दिव्य शक्ति उन्हें दी और कहा कि इस काव्य में कोई भी बात झूठी नहीं होगी।

न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति।

राम के जीवन की समस्त रहस्यमया अथवा प्रत्यक्ष घटनाओं से तुम अवगत रहोगे। ब्रह्माजी ने उन्हें वरदान दिया कि पृथ्वी पर जब तक नदी-पर्वत रहेंगे, तब तक रामायण की कथा लोक-जीवन में प्रवाहित रहेगी।

''यावत्स्थास्यंति गिरयः
सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा
लोकेषु प्रचरिष्यति।।''

साथ ही, जब तक राम की कथा रहेगी, तब तक आपकी प्रतिष्ठा तीनों लोकों में रहेगी। यह कहकर ब्रह्मा जी समस्त आश्रमवासियों को विस्मय में डालकर अंतर्धान हो गये।

ब्रह्मचारी गण उसी एक श्लोक को बारंबार वीणा पर गाने लगे। तब महर्षि वाल्मीकि ने ऐसे ही श्लोकों में पूरा रामायण रचने का संकल्प किया। उस समय तक लिपि का विधिवत विकास नहीं हुआ था, इसलिए सारा काव्य-संभार वेदों की भाँति वाचिक यानी मौखिक ही था इसलिए महर्षि ने कुशासन पर बैठकर, समाधि लगाकर पूरे वृत्तांत का साक्षात्कार किया। उन्होंने राम-लक्ष्मण-सीता, रानियों सहित राजा दशरथ के हँसने-बोलने आदि सभी चेष्टाओं और सम्पूर्ण राष्ट्र की गतिविधियों का अपने योगधर्म से 'यथावत्' साक्षात्कार किया। यहाँ तक कि योगबल से उन्होंने भूत, वर्तमान और

भविष्य का सूक्ष्म निरीक्षण किया। उसके बाद उन्होंने राम के जन्म से लेकर वनवास, सेतुबंध, रावण आदि राक्षसों का वध, राम का अयोध्या लौटना, राज्याभिषेक, राजधर्म के कारण वैदेही का वन में त्याग, लव-कुश का जन्म आदि समस्त घटनाओं का विस्तृत वर्णन रामायण में किया। महर्षि ने छह काण्डों, 5 सौ सर्गों और 24 हजार श्लोकों में पूरे रामायण की रचना की।

चतुर्विंशत्सहस्राणि
श्लोकानामुक्तवानृषिः।
तथा सर्गशतान् पञ्च
षट्काण्डानि तथोत्तरम्।।2।। चतुर्थ सर्ग

रामायण या 'पौलस्त्य वध' महाकाव्य तो रच गया। अब महर्षि को चिंता हुई कि इतने विशाल महाकाव्य को आत्मसात् कर कौन व्यक्ति जन समुदाय को सुनाएगा? तभी आश्रम में रहने वाले वटु-द्वय कुश और लव महर्षि के पास आए। अत्यंत सुरूपवान दोनों भाई राम के प्रतिरूप लगते थे। उनकी धारणा शक्ति अद्भुत थी, मधुर स्वर भी था और दोनों वेदों में पारंगत हो चुके थे। महर्षि दोनों भाइयों को सुयोग्य मानकर वीणा पर स्वर-ताल से रामायण का गायन सिखाने लगे। यथासमय दोनों भाइयों ने सम्पूर्ण महाकाव्य को कण्ठस्थ कर लिया और जब कभी ऋषियों, ब्राह्मणों और साधुओं का समागम होता था, तब उनके बीच बैठकर दोनों भाई एकाग्रचित्त होकर रामायण का गान करने लगे।

एक बार ऐसे ही शुद्ध अंतःकरण वाले वनवासी ऋषि-मुनियों की सभा हुई, जिसमें महात्माओं के बीच बैठकर जब कुश-लव ने रामायण के श्लोकों को गाना शुरू किया, तो उसे सुनकर महात्माओं की आँखें भर आयीं। सभी साधु-साधु (वाह-वाह) कर उठे और कुमारों के मधुर गायन और श्लोकों के माधुर्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे,

अहो गीतस्य माधुर्यं श्लोकानाञ्च विशेषतः।

वे सोचने लगे कि यद्यपि यह घटना बहुत पहले ही हो चुकी है, तथापि प्रस्तुति इतनी सजीव थी कि लगा, पूरी घटना आँखों के सामने हो रही हो। प्रसन्न होकर किसी मुनि ने दोनों कुमारों को कलश प्रदान किया, किसी ने वल्कल। किसी ने काला मृगचर्म भेंट किया, किसी ने जनेऊ (यज्ञसूत्र)। एक ऋषि ने कमण्डलु दिया तो दूसरे ने मूँज की मेखला। तीसरे ने आसन तो चौथे ने कौपीन (लँगोटी) प्रदान किया। एक मुनि ने हर्षित होकर कुठार दिया। किसी ने काषाय (गेरुआ वस्त्र) तो किसी ने चीर (वस्त्रखंड) दिया। किसी मुनि ने खुश होकर जटा बाँधने की रस्सी (जटाबन्धन), किसी ने समिधा बाँधने वाली डोरी (काष्ठरज्जु), किसी ने यज्ञभाण्ड (यज्ञ का बरतन), किसी ने काष्ठभार (तिनके से निर्मित जूना) तो किसी ने गूलर की लकड़ी से बना पीढ़ा अर्पित किया। किसी ने दोनों कुमारों के दीर्घायु होने का आशीष दिया और किसी ने दोनों के कल्याण की कामना की। सभी सत्यवादी मुनियों ने दोनों कुमारों को नाना प्रकार के वरदान दिये और महर्षि वाल्मीकि के अद्भुत काव्य को सराहते हुए उसे परवर्ती कवियों के लिए श्रेष्ठ आधार माना।

इस प्रकार, विश्व की पहली बड़ी कविता के रचयिता को मनीषियों की मुक्तकंठ प्रशंसा मिली और उसका गान करनेवाले दोनों कुमारों को जीवन का पहला सात्विक पुरस्कार।

5/2 वसंत विहार एन्क्लेव, देहरादून.248006
buddhinathji@gmail.com

आदि कवि वाल्मीकि और उनका अमर साहित्य -आशा शैली

आज मन किया कि कुछ अपने प्राचीन साहित्य पर भी बात की जाए जो वास्तव में ही हमारी साहित्यिक धरोहर है। तो आइए हम अपको आदि ग्रन्थ की ओर ले चलते हैं।

भारत के जन-मन में बसी रामकथा अथवा रामायण को आदि काव्य, महाकाव्य आदि कह कर स्मरण किया जाता है तो उसके रचयिता को आदिकवि। आज जो रूप राम कथा का प्रचलित अथवा प्रसिद्ध है वह रामचरित मानस है और मानस जन-जन के मन में बसा है। इसके अतिरिक्त भी भारत की लगभग हर भाषा में रामायण लिखी गई है, किन्तु सबके मूल में वही आदिकवि की लिखी बाल्मीकि रामायण ही है। वही आदि काव्य है, राम का जीवन्त इतिहास है।

कौन थे ये आदि कवि? क्यों लिखा था उन्होंने ये इतिहास? कैसे लिखा? प्रेरणा स्त्रोत कौन रहा?? यह और ऐसे ही बहुत से प्रश्न हैं जिनका उत्तर पाने की अभिलाषा हर उस व्यक्ति को होगी जो रामायण से थोड़ा भी परिचित हो। वैसे तो आज के दौर में दूरदर्शन को कोसना आम बात हो गई है अथवा फैशन हो गया है किन्तु यह भी निर्विवाद सत्य है कि आज रामायण और महाभारत जैसे साहित्य से जन-जन का परिचय इसी दूरदर्शन ने कराया है, तो आइये कुछ बातें बाल्मीकि और उनके द्वारा रचित उस विश्वविख्यात महाकाव्य के बारे में जानें।

तो मित्रो! महर्षि बाल्मीकि के जीवन के बारे में कई कथाएँ सुनी और कही जाती हैं। उनके विषय में यह भी प्रचारित है कि वे नीच (छोटी जाति के, अर्थात् व्याध्र) शिकारी थे और मरा-मरा जप कर संत हुए किन्तु वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड में जब वे सीता को लेकर राम के पास गये तब उन्होंने स्वयं को प्रचेता (अर्थात वरुण) का दसवां पुत्र कहा। इसी समय उन्होंने अपने दीर्घतपा होने की बात भी कही। इसके अतिरिक्त बाल्मीकि ने स्वयं को मनसा-वाचा-कर्मणा निष्पाप भी कहा।

'प्रचेता सो ऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन
न स्मराम्यनृतं वाक्य मिमौ तु, तब पुत्र को।।'
(19/8। उत्तरकाण्ड।।)

अर्थात्, मैं प्रचेता (वरुण) का दसवां पुत्र हूँ, रघुनन्दन! मुझे स्मृति नहीं कि कभी मेरे मुँह से झूठ निकला हो, ये दोनों आप ही के पुत्र हैं।

बहुवर्ष सहस्राणि तपष्चर्या मया ता।। 20/8। उत्तरकाण्ड।। (मैंने हज़ारों वर्ष तप किया है)।

मनसा कर्मणा वाचा भूतपूर्वं न किल्विषम् ।। 21/8। उत्तरकाण्ड।। (मैंने मन वाणी और क्रिया-कलाप द्वारा भी पहले कभी कोई पाप नहीं किया)।

मनु स्मृति में 'प्रचेतसं वसिष्ठं च नारदमेव च' कहा गया है इस पुस्तक के अनुसार ये सब भाई थे। इसके अतिरिक्त भी कई स्थानों पर 'वाल्मीकि विप्रो' एवं वाल्मीकि मुनि कहा गया है। 'शृंण रामायण विप्र वाल्मीकि मुनिना तम'। स्कंद पुराण में इन्हें पूर्वजन्म का व्याघ्र कहा गया है परन्तु इसके साथ ही व्याघ्र से पूर्व जन्म में भी ये स्तम्भ नाम के श्रीवत्स गोत्र के ब्राह्मण कहे गए हैं। व्याघ्रों के संग के कारण कुछ दिन संस्कारवश व्याघ्र कर्म में लगे और शंख ऋषि के सत्संग से पुनः संस्कारित हुए। दूसरे जन्म में अग्निशर्मा नाम से जाने गए। सप्त ऋषियों के सतसंग से कठिन तपश्चर्या में रत रहे और बाँबी पड़ने के कारण वाल्मीकि नाम पड़ा।

इसके पश्चात् आपने वाल्मीकि रामायण की रचना की। इस बात की पुष्टि बंग्ला के कृतिवास रामायण, मानस, अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, राज्यकाण्ड और भविष्य पुराण आदि में भी की गई है (संदर्भ वाल्मीकि रामायण)। कुछ भी हो, महर्षि वाल्मीकि को निर्विवाद आदिकवि माना जाता है।

वाल्मीकि रामायण जिस समय लिखी गई उस समय उसके चरित्र नायक 'श्री राम' एक राजा के रूप में विद्यमान थे। अतः यह ग्रन्थ तत्कालीन इतिहास है किन्तु इसका वर्णन धर्म-अर्थ, लोक व्यवहार और परलोक सुख को दृष्टि में रख कर किया गया है। इसकी शैली ऐतिहासिक न होने से इसे इतिहास की श्रेणी में नहीं रखा जाता। रामकथा को अरबों वर्ष पुराना कहा जाता है अतः पुरातन इतिहास वर्णन वर्तमान संदर्भों में जस का तस स्वीकार नहीं किया जा सकता।

वाल्मीकि आश्रम के बारे में मतभेद उपस्थित होने पर भी तमसा और गंगा आदि नदियों के किनारे इनके आश्रम होना चिन्हित किया जाता है, किन्तु यह तमसा वह नदी नहीं है, जिसका वर्णन गंगा के उत्तर तथा अयोध्या के दक्षिण में किया जाता है। किन्तु वाल्मीकि के अनुसार तमसा गंगा से अधिक दूर नहीं। विद्वानों का मत है कि बाल्मीकि भ्रमणशील थे। ये प्रायः ही घूमते रहते थे। अतः एकाधिक स्थानों पर इनके आश्रम होना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं। ये श्री राम के वनवास के समय चित्रकूट के पास थे तो राम के राज्यारोहण के समय बिठूर में गंगा तट पर। उन्हीं दिनों में इन्होंने नारद से पूछा था कि इस समय धरती पर गुणवान, सचरित्र, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यव्रत, दृढ़ प्रतिज्ञ, जितेन्द्रय और प्रियदर्शन कौन सा पुरुष है। ऐसा कौन है जिसके क्रोधित होने पर देवता भी डर जाएँ। उत्तर में नारद ने रामकथा कही, जो राज्यारोहण तक समाप्त हो गई।

नारद के जाने के दो घड़ी बाद ही वाल्मीकि तमसा नदी के तट पर गये। नदी का कीचड़ रहित स्वच्छ जल देख वे वन की शोभा देखते घूमने लगे। तभी उनकी नज़र एक तड़पती हुई क्रौंची पर पड़ी, जिसका युगल नर वहाँ तीर से बिधा हुआ मृत पड़ा था। उस क्रौंची के चिल्लाने से महर्षि वाल्मीकि को बहुत दया आई और मृत क्रौंच के लिए दुखी होकर उन्होंने कहा,

''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः, शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम, वधीः काममोहितम्।।''
AA15AA*

अर्थात्, अरे निषाद तुझे कभी भी शान्ति न मिले क्योंकि तूने प्रेम में मग्न निर्दोष क्रौंच जोड़े में से एक को मार डाला है। (कहा जाता है कि क्रौंच-हंस पक्षी, रात्रि में एक साथ नहीं रहते वे केवल संतति के कारण ही युगल रूप में विचरते हैं)। वाल्मीकि ने दुख से कातर होकर कह तो दिया कि व्याघ्र को कभी शान्ति न मिले, परन्तु दुःख की अधिकता में कहे गये अपने शब्द महर्षि वाल्मीकि को स्वयं ही बेध गये और उन्हें पश्चाताप होने लगा कि यह उन्होंने क्या कह दिया? क्यों कह दिया? वे इस पर गम्भीरता से विचार करने लगे कि इसका क्या किया जाए। फ़िर उन्होंने अपने शिष्य भारद्वाज ऋषि से कहा कि 'अभी-अभी मेरे मुख से जो शब्द अनायास ही निकल गये हैं, इन्हें वीणा पर भी गाया जा सकता है। अतः इनका प्रबन्ध श्लोक नाम के छन्द में होना चाहिए।' तत्पश्चात् वे अपने आश्रम लौट आये।

कुछ ही देर बाद ब्रह्मा जी उनके आश्रम पर आये तो उन्होंने उनके सामने भी वही बात रख दी। तब ब्रह्मा जी ने उन्हें इसी श्लोक नाम के छन्द में राम-कथा लिखने की प्रेरणा दी और कहा कि जब तुम कार्य प्रारम्भ करोगे तो तुम्हें राम के बारे में सब कुछ अपने आप पता चल जाएगा। इस प्रकार रामकथा लिखी गई जिसे वाल्मीकि कृत रामायण

नाम दिया गया किन्तु यह भी कहा जाता है कि इस ग्रन्थ का दूसरा नाम पौलस्त्य वध अथवा दशानन वध भी था नारद के मुख से सुनी उस कथा के गुप्त और प्रकट जीवन वृत्तांत का महर्षि ने पुनः साक्षात्कार करने का प्रयत्न किया अर्थात् पूरी छान-बीन के बाद ही उन्होंने यह कथा लिखी है कोई हवा में तीर नहीं मारा। वाल्मीकि दृष्टा थे, साक्षी थे और इतिहास रचयिता थे। उन्होंने जो लिखा है सत्य को साक्षी बना कर लिखा है उसमें राम की प्रशंसा हो या निन्दा।

'ततः पाश्यति धर्मात्मा तत् सर्व योगमा स्थितः
पुरा यत् तत्र निवृत्ति पाणावामलंक यथा।।6।।'

(बाल काण्ड छटा सर्ग)

योग का आश्रय लेकर उन धर्मात्मा महर्षि ने पूर्वकाल में जो-जो घटनाएँ हुई थीं उन्हें वहीं हाथ पर रखे आँवले की तरह स्पष्ट देखा। सारा वृतांत जानने के बाद ही उन्होंने राम-कथा लिखनी शुरू की। यह भी कहा जाता है कि जिस समय वे राज्यारोहण तक कथा लिख चुके तब उन्होंने बटुकों को अयोध्या भेजा और रामकथा पूर्ण होने की सूचना दी। इस पर राम का उत्तर था कि अभी रामकथा पूरी नहीं हुई। इससे तो यह भी कहा जा सकता है कि यह कथा राम की अनुमति से ही लिखी गई थी। अन्यथा राम द्वारा यह न कहा जाता कि ''अभी रामकथा पूरी नहीं हुई।''

इस कथा के अनुसार, इन्हीं दिनों सीता को वनवास हो गया और वाल्मीकि की लेखनी पुनः सक्रिय हो गई। निष्कासित सीता वाल्मीकि आश्रम में रह कर दो पुत्रों की माता हुई।

वाल्मीकि ने न केवल दोनों बच्चों के जन्म की पुष्टि की है अपितु उस समय को भी रेखांकित किया है जिस समय वे पैदा हुए थे।

'ततो अर्धरात्रि समये' के साथ ही बाल्मीकि जी ने ऋतु काल का भी निर्धारण कर दिया है। शत्रुघ्न को लवणासुर वध के लिए भेजते समय राम ने उसे कहा था,

''स ग्रीष्म अपयाते तु वर्षारात्र उयागते
हन्यास्त्वं लवणं सौम्य सहिलालोडस्य दर्भतेः''

बा.रामायण उत्तरकाण्ड (पृष्ठ 756)

अर्थात् ''हे सौम्य! जब ग्रीष्म रितु निकल जाए और वर्षारितु हो उस समय तुम लवणसुर का वध करना। क्योंकि यही समय उचित है उस के विनाश के लिए।''

कहा गया है कि वाल्मीकि मुनि दृष्टा थे इतिहासकार थे, उन्होंने जहाँ भी लेखनी से काम लिया है वहाँ तथ्यों सहित लिया है और अपनी बात सप्रमाण कही है। यथा-

तुलसीदास ने जहाँ रामचरित मानस में भक्ति से आगे देखने की चेष्टा ही नहीं की बस 'दुई-दुई सुत सब भाइयन केरे' से काम चला लिया वहीं वाल्मीकि इस विषय में मौन नहीं रहे। इतना ही नहीं वाल्मीकि के अनुसार लक्ष्मण और शत्रुघ्न तो यह भी जानते थे कि सीता कहाँ हैं और ये युद्ध भूमि में खड़े बालक किसके हैं। लक्ष्मण ने सीता को वन में डसेड़ते समय कहा भी था कि 'महर्षि बाल्मीकि मेरे पिता राजा दशरथ के मित्र हैं। अतः अब से तुम इन्हीं के आश्रम में रहो। वे सीता को वाल्मीकि आश्रम के निकट छोड़कर आश्वस्त लौटे थे।

वीणा बजाकर गाये जाने और ताल-लय के साथ सुन्दर सामंजस्य होने के कारण, काव्य में श्रृंगार, करुण, हास्य रौद्र, भयानक और वीर रसों के प्रचुर मात्रा में समावेश ने काव्य को हृदयग्राही बना दिया।

भारत के हर भाग में, हर भाषा में अपनी तरह की अलग-अलग रामायण लिखी गई है, किन्तु मूल सभी का यही बाल्मीकि रामायण रही है, इसके आधार पर विश्व के विभिन्न भागों में रामलीला का नाटक प्रस्तुत किया जाता है।

रामलीला के मंचन की परम्परा भी बहुत पुरानी है, हरिवंश पुराण में रामायण नाटक खेलने का

उल्लेख उपलब्ध है। प्रसंग के अनुसार **'पहले यदुवंशियों ने सुपुर में यह नाटक खेला वहाँ सफ़लता मिलने पर वज्रनाभ ने इन्हें वज्रपुर में भी बुलाया, वहाँ इन्होंने लोमपाद द्वारा शृंगी ऋषि का आगमन, फिर दशरथ-यज्ञ, गंगावतरण, रम्भाभिसार आदि नाटक खेले।'** यह और ऐसे ही अनेक प्रसंग रामकथा (बाल्मीकि रामायण) की रोचकता और प्राचीनता पर स्वीकृति की मुहर लगाते हैं।

डॉ. बुद्धिपाथ मिश्र ने सप्रमाण अपने एक लेख में रामकथा के छः काण्ड कहे हैं, महर्षि ने छह काण्डों, 5 सौ सर्गों और 24 हजार श्लोकों में पूरे रामायण की रचना की।

''चतुर्विंशत्सहस्राणि लोकानामुक्तवानृषिः।
तथा सर्गशतान् पञ्च षट्काण्डानि तथोत्तरम्।।2।।
चतुर्थ सग

रामायण या 'पौलस्त्य वध' महाकाव्य तो रच गया। अब महर्षि को चिंता हुई कि इतने विशाल महाकाव्य को आत्मसात् कर कौन व्यक्ति जन समुदाय को सुनाएगा? तभी आश्रम में रहने वाले वटु-द्वय कुश और लव महर्षि के पास आए। अत्यंत सुरूपवान दोनों भाई राम के प्रतिरूप लगते थे। उनकी धारणा शक्ति अद्भुत थी, मधुर स्वर भी था और दोनों वेदों में पारंगत हो चुके थे। महर्षि दोनों भाइयों को सुयोग्य मानकर वीणा पर स्वर-ताल से रामायण का गायन सिखाने लगे। यथासमय दोनों भाइयों ने सम्पूर्ण महाकाव्य को कण्ठस्थ कर लिया और जब कभी ऋषियों, ब्राह्मणों और साधुओं का समागम होता था, तब उनके बीच बैठकर दोनों भाई एकाग्रचित्त होकर रामायण का गान करने लगे। सीता के पुत्रों लव-कुश ने ''चौबीस हज़ार श्लोकों, पाँच सौ सर्ग, छः काण्डों'' वाली इस रामकथा को गाकर भरी सभा में सुनाया। आज वाल्मीकि रामायण में सात काण्ड देखे जाते है परन्तु विद्वानों के शोध सातवें काण्ड को क्षेपक बता रहे हैं। वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड के अट्ठाइसवें सर्ग के अन्त कहा गया है-

''श्रुत्वा रामायणमिदं दीर्घमायुश्च विन्दति।
रामस्य विजयं चेमं सर्वमक्लिष्टकर्मणः।।111।।
शृणोति य इदं काव्यं पुरा वाल्मीकिना कृतम्।
श्रद्दधानो जितक्रोधो दुर्गाण्यतितरत्यसौ।।112।।

(क्लेशरहित कर्म करने वाले श्रीराम की विजय-कथा स्वरूप इस 'सम्पूर्ण' रामायण काव्य को सुनकर मनुष्य दीर्घकाल तक स्थिर रहने वाली उम्र पाता है। पूर्वकाल में महर्षि वाल्मीकि ने जिसकी रचना की थी, वही आदिकाव्य है। जो क्रोध को जीतकर श्रद्धापूर्वक इसे सुनता है वह बड़े-बड़े संकटों से पार हो जाता है।)

(वाल्मीकि रामायण, युद्ध काण्ड, 28वां सर्ग, श्लोक 111/112, पृष्ठ 595)।

भारतीय पुराणों की कोई भी कथा इन शब्दों के साथ ही समाप्त होती है। इसी आधार पर सातवां काण्ड क्षेपक माना जा रहा है, फिर प्रश्न उठता है कि लव-कुश के रामायण गायन की कथा कहाँ से आई? कैसे लव-कुश वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचे? क्या वे वहाँ विद्याध्ययन के लिए गए थे? यदि हाँ तो रघुवंश के कुलगुरू वशिष्ठ जी ने उन्हें शिक्षा क्यों नहीं दी? यदि नहीं तो युद्धकाण्ड में कथा को विश्राम देने के बाद सातवें सर्ग का क्या औचित्य बनता है???

इस संदर्भ में व्यापक शोध किए गए हैं और अभी किए भी जा रहे हैं। जो कि सातवें काण्ड को गलत बताते हैं। मुझे लगता है कि इस समय हमें उन शोधों पर भी विचार करना चाहिए ताकि हम उचित प्रमाणों के अनुसार अपने मूल ग्रंथों के साथ न्याय कर सकें।

-सम्पादक शैलसूत्र

जगरानी का चंदू कैसे बना शहीद शिरोमणि पंडित चन्द्रशेखर आजाद

– डॉ. उमेश प्रताप वत्स

वीरभद्र तिवारी ने आजाद और सुखदेव राज को अल्फ्रेड पार्क में मंत्रणा करते हुए देख लिया था। वह तुरंत पुलिस अधिकारी शंभूनाथ के पास पहुँचा और कहा, पंडितजी अल्फ्रेड पार्क में हैं। शंभूनाथ ने अंग्रेज अफसर मैजर्स को आजाद के पार्क में होने की सूचना दी। तभी आर्म्ड फोर्स के 80 जवानों को पुलिस सुपरिन्टेंडेंट मैजर्स का फोन द्वारा आदेश मिला कि आधे मिनट में अल्फ्रेड पार्क जायें। तुरंत सभी अल्फ्रेड पार्क की ओर भागे। डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट विश्वेश्वर सिंह के साथ सुपरिन्टेंडेंट ऑफ पुलिस (स्पेशल ब्रांच) नॉट बावर भी अल्फ्रेड पार्क पहुँच गया। पुलिस बल के जवानों ने पार्क को तीन तरफ से घेर लिया था। अचानक विश्वेश्वर सिंह को साथ लिए नॉट बावर पार्क के अंदर घुसा और आजाद पर फायर कर दिया। गोली आजाद की दाहिनी जांघ में लगी और हड्डी तोड़ती हुई निकल गई। इसके बाद आजाद की कोल्ट सेमी ऑटोमैटिक गन, जिसे वे 'बमतुल बुखारा' भी कहते थे, गरजी और नॉट बावर की कलाई को तोड़ती हुई एक गोली निकल गई। दूसरी मैगजीन लोड करने के बाद आजाद गरजे- 'अरे ओ ब्रिटिश सरकार के गुलाम। मर्द की तरह सामने क्यों नहीं आते। मेरे सामने गीदड़ की तरह क्यों छिप रहे हो।' जैसे ही विश्वेश्वर सिंह ने आजाद को ललकारा, तभी आजाद की एक गोली उसका जबड़ा तोड़ते हुए निकल गई।

तब तक आजाद 39 राउंड फायर कर चुके थे। अब उनके पास अंतिम गोली बची थी। भारत माता को याद करते हुए इसी अंतिम गोली से उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

चन्द्रशेखर नाम, सूरज का प्रखर उत्ताप हूँ मैं,
फूटते ज्वालामुखी-सा, क्रांति का उद्घोष हूँ मैं।
कोष जख्मों का, लगे इतिहास के जो वक्ष पर
चीखते प्रतिरोध का जलता हुआ आक्रोश हूँ मैं।

सौम्यता लिये उनका चेहरा, भावपूर्ण आँखें, जिन्हें देख कर कोई कह नहीं सकता था कि ये किसी क्रांतिकारी की आँखें हैं। उनकी आँखें किसी कवि और संत की तरह शांत और सहज थी। विनम्रता झलकते चेहरे के पीछे इतना दृढ़ संकल्प और क्रांतिकारी संघर्ष होगा को यह अनुमान भी नहीं लगा पाता था।

जागरानी देवी तो अपने चंदू को संस्कृत का विद्वान बनाना चाहती थी किंतु नियति को यह स्वीकार नहीं था। अभावग्रस्त जीवन गुजारते हुये चंदू आदिवासी मित्रों में खेलता-कूदता निर्भयता के अनेकों उदाहरण पेश कर जाता। 12 वर्ष की आयु में दौड़ते-दौड़ते पत्थर का निशाना लगाना, आदिवासियों के साथ तीरदांजी के करतब दिखाना, साइकिल की ट्यूब जोड़कर गुलेलनुमा वृक्ष को गुलेल की तरह प्रयोग कर अत्याचारी ब्रिटिश अधिकारी को घायल करना जैसे कारनामें चंदू के कुछ बड़ा करने की ओर संकेत कर जाते। पिता सीताराम तिवारी चंदू की पढ़ाई के प्रति उदासीनता एवं आक्रामक स्वभाव को लेकर चिंतित थे। अत: चंदू को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी विद्यापीठ भेज दिया गया। यहाँ भी भारत माँ की बेड़ियाँ चंद्रशेखर तिवारी को उद्वेलित करती थी और वे गाँधी के असहयोग आंदोलन में पूरी आक्रामकता के साथ कूद पड़े।

असहयोग आंदोलन से जागे देश में दमन-चक्र जारी था, युवा शेखर सत्याग्रहियों के बीच निकल पड़े, बेंत बरसाने वालों में से एक सिपाही के सिर में शेखर ने

एक मोटा पत्थर मारकर उसे लहुलुहान कर दिया।

उसे गिरफ्तार कर लिया गया। एक मजिस्ट्रेट के सामने पेश होने पर, उन्होंने अपना नाम 'आज़ाद', अपने पिता का नाम 'स्वतंत्रता' और अपना निवास स्थान 'जेल' बताया। उस दिन से उन्हें लोगों के बीच चंद्रशेखर आज़ाद के नाम से जाना जाने लगा। गुस्साए अंग्रेज जज ने पंद्रह बेंतों की सख्त सजा सुनाई। बेंत खाते हुए लहुलुहान शेखर ने हर सांस में वंदेमातरम का जयघोष करते हुए युवाओं में देशप्रेम की शक्ति का संचार कर दिया। फिर अंग्रेजी हुकुमत जीवन भर आज़ाद के पावन शरीर को कभी छू तक नहीं पाई। चंद्र शेखर और जज के बीच सवाल-जवाब के चर्चे बड़े-बड़े क्रांतिकारी नेताओं की जिज्ञासा को बढ़ा गये। सभी इस युवा क्रांतिवीर से मिलना चाहते थे किंतु 1922 में महात्मा गाँधी द्वारा मनमाने ढंग से असहयोग आंदोलन स्थगित करने से वे निराश हो गये। आजादी के लिए संघर्ष का संकल्प उन्हें रामप्रसाद बिस्मिल की हिंदुस्तान रिपब्लिकन एशोसियेशन में ले आया, वे उसके प्रमुख सदस्य बने। काकोरी ट्रेन डकैती के लिए बिस्मिल ने अपनी मदद के लिए 9 क्रांतिकारियों को चुना था, राजेंद्र लाहिरी, ठाकुर रोशन सिंह, सचन्द्रि बक्शी, अशफ़ाकउल्ला ख़ाँ, मुकुंदी लाल, मन्मथनाथ गुप्त, मुरारी शर्मा, बनवारी लाल और चंद्रशेखर आज़ाद। लूट के बाद आज़ाद को गठरी में बंधी लूट की रक़म को लखनऊ पहुँचाने की ज़िम्मेदारी दी गई थी जो उन्होंने लखनऊ जाकर सुरक्षित बिस्मिल जी को सौंप दी थी। साल 1925 का अंत होते-होते काकोरी कांड के करीब-करीब सभी अभियुक्त पकड़ लिए गए थे सिवाए कुंदन लाल और चंद्रशेखर आज़ाद के। उन दिनों उनके साथी उनका नाम लेने के बजाए उन्हें नंबर 1 और नंबर 2 कहकर पुकारते थे। उस ज़माने में आज़ाद बहुत गर्व से कहते थे, 'मेरे जीते जी कोई मुझे पकड़ नहीं पाएगा।"

आज़ाद पेड़ों पर चढ़ने में बहुत निपुण थे। बचपन से ही पेड़ों पर चढ़कर वे ब्रिटिश शिविर की कार्यप्रणाली पर नजर रखते थे। उनको अपने शरीर पर तेल से मालिश करवाना बहुत पसंद था। वो खुद भी बहुत अच्छी मालिश करते थे। नहाने से पहले वो अपने सिर की खुद मालिश किया करते थे।

वे इतने सचेत रहते थे कि एच.एस.आर.ए. के कमांडर इन चीफ के रूप में जारी किए गए पैम्फलेट पर हस्ताक्षर करते समय अक्सर 'बलराज' उपनाम का इस्तेमाल करते थे।

ब्रिटिशराज कानून प्रवर्तन गुट पर आज़ाद का प्रभाव इस बात से स्पष्ट था कि उन्होंने उन्हें मृत या जीवित पकड़ने के लिए कितना प्रयास किया। यहाँ तक कि उन पर एक लाख रुपये का इनाम भी घोषित कर दिया था।

17 दिसंबर, 1928 को चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह और राजगुरू ने शाम के समय लाहौर में पुलिस अधीक्षक के दफ्तर को घेर लिया और ज्यों ही जे.पी. साण्डर्स अपने अंगरक्षक के साथ मोटर साइकिल पर बैठकर निकले तो राजगुरू ने पहली गोली दाग दी, जो साण्डर्स के माथे पर लग गई वह मोटरसाइकिल से नीचे गिर पड़ा। फिर भगत सिंह ने आगे बढ़कर 4-6 गोलियाँ दाग कर उसे बिल्कुल ठंडा कर दिया। जब साण्डर्स के अंगरक्षक ने उनका पीछा किया, तो चंद्रशेखर आजाद ने अपनी गोली से उसे भी समाप्त कर दिया।

चंद्रशेखर आजाद की निशानेबाजी बचपन से बहुत अच्छी थी। दरअसल इसकी ट्रेनिंग उन्होंने बचपन में ही ले थी। सन् 1922 में चौरी चौरा की घटना के बाद गाँधीजी ने आंदोलन वापस ले लिया तो देश के कई नवयुवकों की तरह आज़ाद का भी कांग्रेस से मोहभंग हो गया। जिसके बाद पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, शचीन्द्रनाथ सान्याल योगेशचन्द्र चटर्जी ने 1924 में उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों को लेकर एक दल हिन्दुस्तानी प्रजातान्त्रिक संघ का गठन किया। चन्द्रशेखर आज़ाद भी इस दल में शामिल हो गए थे।

और मरना ही हमें जब, तड़प कर घुटकर मरें क्यों
छातियों में गोलियाँ खाकर शहादत से मरें हम।

मेमनों की भाँति मिमिया कर नहीं गर्दन कटाएँ,
स्वाभिमानी शीष ऊँचा रख, बगावत से मरें हम।

जागरानी देवी का लाड़ला चंदू आगे चलकर हिंदुस्तान रिपब्लिकन एशोसियेशन का चीफ कमांडर बनकर देश को स्वतंत्र कराने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, ऐसा तो किसी ने सोचा भी नहीं था।

27 फरवरी के दिन 1931 को भारत माता के लिए शहीद होने वाले इस महापुरुष के बारें में जितना कहा जाए उतना कम है। पृथ्वी पर चन्द्रशेखर आजाद जैसा योद्धा का अवतरण एक चमत्कारिक सत्य है, जिस कारण उन्नाव जिले का नाम विश्वभर में प्रसिद्ध हो गया।

27 फरवरी 1931 की एक ऐतिहासिक सुबह प्रयागराज के आनंद भवन में जवाहर लाल नेहरू से मुलाकात के बाद चंद्रशेखर आजाद सीधे अल्फ्रेड पार्क चले गए। आज़ाद का संगठन एच.एस.आर.ए. बिखर रहा था। भगत सिंह जेल में थे और उन्हें फांसी से बचाने की हर कोशिश नाकाम हो रही थी। वो आजाद जिन्हें 'बहुरूपिया' कहा जाता था। जिनकी सिर्फ तस्वीर हासिल करने में अंग्रेजों के पसीने छूट जाते थे, अपने ही साथी की गद्दारी को नहीं भांप सके। उनके पुराने साथी रहे वीरभद्र तिवारी ने उन्हें देख लिया और पुलिस अफसर शंभूनाथ तक खबर पहुँचा दी। पार्क में घिरने के बाद आजाद डटे रहे, लेकिन उन्हें 5 गोलियाँ लगीं और वे बुरी तरह घायल हो गए। अपनी प्यारी कोल्ट पिस्टल में बची आखिरी गोली से उन्होंने खुद को शहीद कर लिया, लेकिन अंग्रेजों के हाथ नहीं लगे। आजाद अक्सर गुनगुनाते थे- 'दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आज़ाद हैं, आज़ाद ही मरेंगे।' यही सच भी हुआ।

अंग्रेज उनकी शहादत से इतना घबरा गए थे कि जिस जामुन के पेड़ के पीछे छिपकर उन्होंने 32 मिनट तक गोलियों का सामना किया, उसे भी कटवा दिया था। दरअसल आजाद की शहादत के बाद लोग इस पेड़ की पूजा करने लगे थे और यहाँ की मिट्टी का तिलक करने लगे थे।

हिन्दुस्थान में क्रांति की जितनी योजनाएँ बनीं, सभी के सूत्रधार आज़ाद थे। कानपुर में भगत सिंह से भेंट हुई। लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए सांडर्स वध में अहम भूमिका निभाई। एसेंबली बम धमाके में गिरफ्तार भगत सिंह को छुड़ाने की योजना चन्द्रशेखर ने बनाई किंतु बम की जांच करते हुए बम फट जाने से भगवतीचरण वोहरा शहीद हो गए जिस के कारण वह योजना विफल हो गई।

27 फ़रवरी, 1931 के दिन चन्द्रशेखर आज़ाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठकर अल्फ्रेड पार्क में विचार विमर्श कर रहे थे कि तभी वहाँ अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया। चन्द्रशेखर आज़ाद ने सुखदेव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे। अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ में लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होंने अपनी कनपटी पर चला दिया और अंग्रेजों के हाथ अपने पवित्र जीवित शरीर को नहीं लगने दिया। कहते हैं मौत के बाद अंग्रेजी अफसर और पुलिसवाले चन्द्रशेखर आज़ाद के शव के पास जाने से भी डर रहे थे। जिसे ब्रिटिश हुकुमत इतने सालों तक पकड़ नहीं सकी थी, उसे 40 मिनट में ढूँढकर कर अल्फ्रेड पार्क में घेर लिया वो भी पूरी पुलिस फ़ोर्स और तैयारी के साथ? जो कि बिना मुखबरी के असंभव था। यह कृत्य तत्कालीन नेताओं को संदेह के घेरे में लाता है, जो आज़ाद और भगतसिंह की प्रसिद्धि से बेचैन थे। 25 वर्ष की आयु में बलिदान होकर वह चंदू से 'शहीद शिरोमणि पंडित चन्द्रशेखर आजाद' बन गये और हिदुस्थानियों को देशप्रेम, निर्भयता, निस्वार्थ एवं जुझारूपन की सीख दे गये।

umeshpvats@gmail-com
14 शिवदयाल पुरी, निकट आइटीआइ
यमुनानगर, हरियाणा - 135001
9416966424

आई बाढ़ गयी

-स्नेह गोस्वामी

"अजी सुनते हो उठो।" सुलोचना ने किरसन के बिल्कुल कान के पास जाकर पुकारा।

किरसन उर्फ कृष्ण ने आँखें खोलने की असफल सी कोशिश की पर नींद से बोझिल पलकें मानो चिपक गयी थीं। वह चादर को सिर से पाँव तक खींच करवट बदलकर सो गया तो सुलोचना ने अधीरता से झकझोरा, "उठो भी, बाहर देखो।"

कृष्ण ने घड़ी देखी। अभी सुबह के सवा चार हुए थे। आसमान अँधेरे की चादर ओढ़े सो रहा था।

"ऐसी भी क्या आफत है जो इतनी सुबह शोर मचा रही हो?"

सुलोचना को साँस सामान्य करने में पूरा जोर लगाना पड़ा था, "वो पाँवधो आयी हुई है।"

"भागवान ये पाँओधो तो सदियों से यहीं है, शहर में पीढ़ीयों से बह रही है। आज कहाँ से आयी?"

"मेरा मतलब चढ़ गयी है।" तब तक बाहर लोगों के चलने दौड़ने, बोलने की आवाजें सड़क पर सुनायी देने लगी थीं। सब सरपट एक दूसरे से होड़ लगाए चले जा रहे थे खालापार पुल की ओर। कुरते के बाजू में हाथ डाल पैरों में चप्पल फँसाते वह भी बाहर की ओर लपके और भीड़ में शामिल हो गये। पंद्रह मिनट का रास्ता दस मिनट में पार कर जब वह पुल पर पहुँचे तो वहाँ अच्छी खासी भीड़ जमा हो चुकी थी ।

हमेशा मुश्किल से घुटनों तक पानी वाली पाँवधो इस समय खतरे के निशान से ऊपर जा चुकी थी। पाँवधो जिसके बारे में कई लोककथाएँ और जनश्रुतियाँ प्रसिद्ध हैं। जैसे पाँवधो साक्षात गंगा जी का अवतार है। कि पाँवधो का आदि-अंत आजतक कोई ढूँढ नहीं पाया। यह बाबा लालजी दास के कमंडल से निकली है इसीलिए उनके आश्रम के आसपास ही चुपचाप बिना शोर किए बहती है।

बाबा लालजी दास सिद्ध पुरुष थे। रमते जोगी। एक दिन घूमते घामते सहारनपुर आ गये तब यह सकलापुर हुआ करता था। यहाँ शमशान के पास वाले बाग में उन्होंने धूनी रमायी तो यहीं के हो गये। यहाँ के बड़े शमशान के पास आज भी उनका बाड़ा स्थित है। बाबा का नियम था, हर रोज चार बजे अँधेरे में ही आठ कोस दूर गंगाजी में पैदल स्नान करने जाते। लौटते लौटते दस और कभी-कभी तो ग्यारह बज जाते। वापिस आ साथ लाये गंगाजल से शिव का जलाभिषेक करते। फिर प्रसादी तैयार होती, तब आहार ग्रहण करते। तब तक जल भी नहीं, आँधी हो या तूफान यह नियम कभी नहीं टूटा। पर एक दिन बाबा से उठा ही नहीं गया। दो दिन से बुखार था लेकिन नित्यक्रम जारी था। बाबा ने उठने की कोशिश की पर शरीर धोखा दे गया। सुबह गयी, दोपहर गयी, शाम भी जाने को हो गयी। बाबा ने अपनी सारी शक्ति बटोरी। अपनी छड़ी और कमंडल को आदेश दिया जाओ गंगा से मेरे शिव के लिए पानी ले आओ। गंगा को कहना, हर रोज बच्चा माँ के पास आता था, क्या आज माँ नहीं आ सकती थी। छड़ी और कमंडल चल दिए। आधे घंटे बाद आगे-आगे छड़ी आ रही थी, उसके पीछे कमंडल और उसके पीछे स्वयं गंगा मैया। बाबा ने जी भर गंगा में स्नान किया। जिस रास्ते से बाबा की छड़ी गयी थी, उस दरार से ढमोला नाम का बरसाती नाला शहर के दक्षिण में बहता है। उत्तर में जिस दिशा से लौटी उधर बहती है

यह पाँवधो। बाबा के कमंडल जितना जल है इसमें इसलिए पाँव ही बुड़ते हैं।

साल में नगरपालिका दो बार इसकी सफाई कराती है। पहली बार बैसाखी से एक हफ्ता पहले क्योंकि बैसाखी पर लालदास के बाड़े का नहान होता है। शहर के, आसपास के गाँवों के लोग गंगा स्नान का पुण्य लेने आते है। छोटे-मोटे खेल-खिलौने वाले अपनी दुकानें सजाने आते हैं। कुम्हार मिट्टी से कबूतर, मोर, राजा, रानी, चक्की और भी न जाने क्या-क्या बना कर लाते है इस मेले के लिए। पूरा दिन खूब धूमधाम रहती है। सो निगम वाले भी सफाई का थोड़ा-सा पुण्य लाभ ले लेते हैं ।

दूसरी बार यह सफाई होती है असौज की रामलीला के पहले। केवटलीला यहीं जो संपन्न होती है। बनवास लीला के बाद रामलीला भवन में रामलला की आरती होती है फिर राम-सीता और लक्ष्मण रथ पर सवार होते हैं। बैंडबाजों के साथ शहर के मुख्य बाजारों से होता हुआ रथ पाँवधो के घाट भूतेश्वर मंदिर पर पहुँचता है। वहाँ साफ सुथरी पाँवधो में सजी सँवरी नाव खड़ी होती है। रथ से उतर कर राम-लक्ष्मण और सीता नाव की ओर बढ़ते हैं। सड़क के दोनों ओर खड़ी भीड़ जयकार कर उठती है, सियापति रामचंद्र की जय। राम के हाथ में माइक थमा दिया गया है। राम करुण स्वर में गुहार लगाते हैं, ''सुनो हो केवट भइया! जल्दी लगा दो गंगा पार।''

केवट जल्दी-जल्दी से अपने डायलाग बोलता है। भीड़ साँस रोके खड़ी सुन रही है। अब केवट परात में पानी ले आया है, पैर धोये जा रहे हैं। केवट के बाद मैनेजमैंट के सदस्य बारी बारी से चरण पखार रहे हैं। आरती होती है, केवट कंधे पर उठा कर राम और सीता को नौका में रखी मैरेज पैलेस वाली कुर्सियों पर पधरा देता है। लक्ष्मण खुद चल कर आता है और राम सीता की कुर्सियाँ पकड़कर उन के पीछे खड़ा हो गया है। कीर्तनिए अभी गा रहे हैं,

''सुनो मेरे रघुराई

लिए बिना उतराई कैसे ..।'' तब तक नाव में लगी रस्सी पकड़कर शहर के धनी-मानी घुटनों घुटनों पानी में उतर गये हैं। रस्सी के सहारे नौका धीरे-धीरे आगे बढ़ती है। कुछ कदम दूर आगे रथ फिर खड़ा है। राम-लक्ष्मण और सीता जयजयकार के बीच दोबारा रथ पर बैठ गये हैं। रथ कुछ देर बाद आँखों से ओझल हो जाता है तो भीड़ आगे बढ़ती है, जल से अपने ऊपर छींटा देती है, आचमन कर मुक्ति के सपने देखती है और प्रसन्नचित्त घर लौट जाती है। इन दोनों अवसरों के छोड़कर यह पाँवधो शहर की पापधो बन कर सारा साल पूरे शहर का मैला ढोती है। सारे शहर का गटर, नाले, नालियाँ इसी में समाते हैं।

- अगर यह पाँवधो न होती तो पूरा शहर कचरे का बड़ा-सा डिब्बा नजर आता। कृष्ण ने मन ही मन सोचा, वह अपनी दुकान सँभालने बेहटरोड चल पड़ा है। हल्की हल्की बूँदें अभी भी पड़ रही हैं पर लोग जमे हुए हैं वहीं पाँवधो के तट पर। एकटक देखे जा रहे हैं पानी की रफ्तार। बीच धारा में अचानक किसी के घर का सामान डूबता उतराता गुजरता है। लोग सहम कर डर के मारे हाथ जोड़ लेते हैं। बीच-बीच में खबरों का आदान प्रदान भी चल रहा है।

''मोरगंज तो सारा डूब गिया। सारी आढ़त में इ पानी भर गिया।''

''इब्ब सारा गेहूं, चावल बरबाद हो जावेगा।"

''दालमंडी वाले पुल में भी पानी-पानी हो गया।"

''लाला गिरधारी ने दुकान पै जाकर देखा। शटर के नीचे से गुड़ और शक्कर शरबत बन के बह रहे थे। लाला तो चक्कर खाके गिर गिआ। सुना हारट अटैक था।"

''नक्खासा बजार में भी पानी-पानी है।''

''सुनी है, जे बलि लिए बिना नीं जाती। पक्का बलि होती है, मेरे दादा बतावै थे।''

''इसै नारियल भी तो चढ़ाया करैं।''

''सही कहवै तू, चढ़ै तो सही।''

बीस मिनट में ही कहीं से दो रेहड़ी पर नारियल आ गये। साथ ही रामरती मनिहारन भी अपनी टोकरी में बिंदी, टिकुली, सेनुर और चूड़ी सजाए पहुँच गयी है। सुहागनें पति और बच्चों की दुआ माँगती सूप भर चार चूड़ी, सिंदूर, बिंदी, काजल खरीद रही हैं। जिसके पास पैसे नहीं हैं, घाट की दुकान बाले खन्ना अंकल अपनी कापी में लिख-लिख के सामान दिलवा रहे हैं। धरम का मामला है। शाम को पैसे पहुँच जाएँगे। न पहुँचे तो हर दिन के पाँच रुपये ब्याज।

औरतें बच्चों के सिर पर से पाँच बार घुमा के नदी में नारियल सिरा रही हैं। जिनके साथ बच्चे नहीं हैं, उन्होंने अपने ही सिर के ऊपर से नारियल फेर के नदी में बहा दिया है।

''हे गंगा मइया! सावन में आई हो। बोहत हो ली। खुशी खुशी जाओ अब।''

थोड़ी सी देर में धारा में कई नारियल, फूल, चूड़ियाँ तैरते नजर आने लगे हैं।

सुबह के चार बजे से अब दिन के बारह बजने वाले हैं पर भीड़ ज्यों की त्यों है। भूख-प्यास भुलाकर इस समय सब पाँवधो की लीला देखने में व्यस्त हैं।

इसी भीड़ में शंकर खड़ा है। सामने स्कूल की वरदी में सजी दो चोटियाँ झुलाती तीन लड़कियाँ खड़ी हैं। पीठ पर भारी भरकम स्कूल बैग टँगा है पर उन्हें जैसे कोई परवाह ही नहीं। बात-बेबात ताली बजा कर हँसती खिलखिलाती जाती हैं। शंकर को पानी दिखाई नहीं देता। नदी का उफान भी नहीं। न ही लोगों के चेहरे पर चिपकी चिंता। दिख रहा है तो बस हँसी का कलकल करता झरना जो लगातार बह रहा है। रुकने का नाम ही नहीं ले रहा। गोरी लड़की हँसते-हँसते टमाटर जैसी लाल हो जाती है। उसे लगता है पाँवधो की बाढ़ से शायद वह बच जाए पर इस बहाव से बचना नामुमकिन है। वह गौर से देखता है, यह जो ज्यादा ही चुलबुली है, यह अपनी गली के समीर की बहन जैसी लग रही है। शायद वही या कोई और। वह अनिश्चय की स्थिति में है। सोच ही रहा है कि उसके कान अपनी ही आवाज से चौंक गये हैं।

''ए छुटकी तू आज स्कूल नहीं गयी।''

आवाज सुन वे तीनों घूम गयी हैं चुलबुली के साथ साथ गोरी भी।

''गये थे भैया जी, पर सारे मटियामहल में तो पानी भरा है। बड़ी दीदी ने छुट्टी कर दी। रेनीडे हो गया आज।''

अब आगे क्या बोले, उसे समझ नहीं आता। एक बार तो डर भी गया अगर इन्होंने मुझ से यही सवाल पूछ लिया तो? पर उसका डर अकारण निकला। वे फिर से अपनी बातों में मस्त हो गयी हैं। वह अकबका कर इधर-उधर देखता है। किसी ने कुछ देखा सुना तो नहीं। पर किसी को उसे देखने की फुर्सत नहीं। एक ठंडी साँस ले के वह निश्चिंत हो गया है। अचानक उसके हाथ पैंट की जेब में चले गये। जेब में पाकेटमनी के रुपयों में से पचास रुपये अभी पड़े हैं। उधर पानी है कि पुल को छूने लगा है। कोई-कोई लहर पुल के ऊपर भी आ जाती है। दो चार शरारती लड़के पुल के ऊपर वाले पानी पर छपक-छपक करते दौड़ पड़े। लोगों के झुंड ने चिल्ला कर उन्हें रोकना चाहा, तब तक वे पुल पार कर गये। लड़के अपनी जीत पर प्रसन्न हैं। उनका हौसला बढ़ गया है। वे फिर से इधर के लिए दौड़ पड़े हैं, ये उनके लिए खेल है। लोगों का विरोध फीका पड़ गया है पर उनके माथे

की लकीरे गहरा गयी हैं। औरतें आतुर हो उठी हैं, लड़कियों की हँसी पर भी विराम लग गया है। वह लपक कर तीन पुड़िया दाल-मोठ ले आया। एक अपने पास रख दो पुड़िया उन लड़कियों की ओर बढ़ा दी। उसके आश्चर्य को बढ़ाते हुए उन्होंने पुड़ियाँ पकड़ ली और खाना शुरू कर दिया। वह भी खाने लगा है, अबोला ज्यों का त्यों है।

तभी वातावरण को चीरती एक चित्कार हवा में गूँज उठी है। पुल पर दौड़ते लड़कों में से एक शायद अपना वेग नहीं सँभाल पाया या किसी साथी का धक्का लग गया और वह नदी की उफनती लहरों में समा गया। जब तक कोई कुछ समझ पाता, वह आँखों से ओझल हो गया। हवा आहों और सिसकियों से बोझिल हो गयी है। पीछे वालों को कुछ दिखा नहीं तो आगे वालों से बार बार पूछ रहे हैं, ''इभ का हुआ, का हुआ, हमऊ तौ बताओ। पर कोई कुछ बताने की स्थिति में कहाँ है।

घाट के दोनों किनारों पर बोलते बतियाते लोग स्तब्ध हो गये हैं। हर तरफ सन्नाटा छा गया है। कोई किसी से बात नहीं कर रहा। लोग उचक-उचक कर देख रहे हैं, शायद उस बच्चे का कोई निशान मिल जाए।

अचानक एक ठंडी साँस भर किसी ने कहा, ''बड़े सही कहते थे न। ये पाँवधो जब आती है तब एक बलि अवश्य लेती है, ले ली न बलि।"

लोगों ने इधर-उधर देखा, किसने कहा ...? किसने? कारण जो भी रहा हो पर अब का यही सच था। बेचारा लड़का डूब गया, लोग गमजदा हो गये। बेचारे बच्चे ने शहर को पाँवधो के प्रकोप से बचाने के लिए अपनी बलि दे दी थी। लोगों ने मान लिया कि बलि हो चुकी। इस बलि को लेने के बाद गंगा मैया शांत हो लौट जाएँगी। पानी अब कुछ घंटे और है। उसके बाद सब ठीक हो जाएगा।

लटके हुए उदास चेहरे लिए सब लोग घरों को लौट पड़े हैं। पत्नियों ने अपनी काँच की चूड़ियाँ और माँओं ने अपने बच्चे अपने आँचल में छिपा लिए। अनदेखे ईश्वर से सबकी रक्षा करने की प्रार्थना भी कर ली।

दुकानों वाले ऊपर से शांत दिख रहे थे पर मन ही मन हुए नुकसान का हिसाब लगा रहे हैं। इंश्योरैंस वाले को क्या हिसाब दिखाना है, उसके क्यास लगाये जा रहे हैं।

कृष्ण की दुकान ऊँची जगह बनी थी इसलिए नुकसान नहीं हुआ पर उसने भी लंबी सी लिस्ट बना ली है। मुआवजे का एसटीमेट लेने वकील के पास जा रहा है ताकि समय रहते एप्लाई कर सके। जो पीछे रह गया, उसे कुछ नहीं मिलने वाला। कृष्ण जैसे सैंकड़ों लोग इस जुगाड़ में लग गये हैं।

शंकर अभी तक पाँवधो की धारा देखने में ही खोया हुआ था। पानी उस लड़के को अपने भीतर छिपा शरारत से मुस्कुरा रहा था। उछलती लहरें पहले से शांत दिख रही थीं। उसने डबडबायी आँखों से पीछे मुड़कर देखा। उसका दिल धक से रह गया। लड़कियाँ वहाँ से जा चुकी थीं। उफ उसने तो उनका नाम तक नहीं पूछा। एक प्रेम कहानी का ऐसा अंत होता है क्या।

बाढ़ में बहुत कुछ बह जाता है। फिर से नये जीवट के साथ पुनरनिर्माण होता है। लोग भी घरों की ओर लौट रहे थे। घर जहाँ जीवन है, उसी जीवन की ओर।

धीरे-धीरे पैर घिसटकर चलता हुआ वह भी लौटने वालों की भीड़ का हिस्सा हो गया है ।

9876678110
goswmisneh@gmail-com

शैल- चंद्रा -डॉ. सुधा जगदीश गुप्त

पहाड़ों पर इठलाती, सुबह-शाम के साथ खेलती-कूदती बड़ी हो रही थी चंद्रा। चंद्रा पहाड़ी सुबह-शाम की तरह खूबसूरत। अल्हड़ चंद्रा सहेलियों के साथ नालों में नहाती, उछलती। माँ पुकारती, ''चंद्राऽऽऽ, चंद्रा ...'' तो वह पहाड़ों में छुपकर पुकारती, ''माँ ....ऽ..., ढूँढ़ो, मैं कहाँ हूँ?'' और फिर झूमकर माँ के गले लग जाती। ऐसी ही नटखट, चुलबुली, दूधिया चाँदनी सी उज्जवल चंद्रा, भाइयों की दुलारी, माँ-पापा की लाड़ली चंद्रा ....।

सहेलियों ने आवाज लगाई, ''चल चंद्रा ...'' और चंद्रा तो जैसे हर वक़्त तैयार ही रहती थी। अभी पानी में पैर डालकर बैठी ही थीं सहेलियाँ, तभी दूर पहाड़ से झांकते युवक ने चंद्रा को जल की परछाईं में देखा। चंद्रा तो अनजान मस्ती में सहेलियों के साथ ठिठोली कर रही थी। किन्तु, युवक चंद्रा के रूप-लावण्य में डूब चुका था। उसने सहेलियों से चंद्रा का नाम सुन लिया और पहाड़ की ओट से पुकारने लगा, ''चंद्रा ...ऽ...ऽ चंद्रा ...'' पहाड़ी से गूंजती आवाज चंद्रा और उसकी सहेलियों ने सुनी। चंद्रा तो मौन थी किन्तु, सहेलियों ने छेड़ना शुरू कर दिया, ''ओह, कैसी प्रेम भरी पुकार है! चंद्रा तेरे चाहने वाले किसी राजकुमार की पुकार है।''

''चुप करो, प्रेम का नाम भाई सुन लेगा तो काट के फेंक देगा।''

''अरी! प्रेम में लाख रोड़े आयें पर, वह तो अपनी राह निकाल ही लेता है।''

सभी सहेलियाँ हँसती- मुस्कराती घर चली गईं। चंद्रा के कानों में आवाज गूंज रही थी, ''चंद्रा ...'' कौन होगा? रात करवटें बदलते गुजरी। दूसरे दिन सुबह सहेलियों ने फिर आवाज लगाई, ''चलो चंद्रा, चलो झरने में नहाने।''

चंद्रा चली। उसके पाँव की पैंजनी बज रही थी। नागिन सी इठलाती चोटी कमर पर लहरा रही थी। अभी नाले पर पहुँची ही थी, उसने पानी में पैर रखा। गागर डुबोई ही थी कि फिर वही दर्द भरी आवाज, प्रेम में सनी ''चंद्रा ... ऽ...चंद्रा...'' अब उस आवाज के सहारे चंद्रा चली जा रही थी, खिंची जा रही थी प्रेम की डगर पर। आखिर पहुँच ही गई चंद्रा और एकटक निहारती ठगी सी खड़ी रह गई, उस सम्मोहक रूप के आगे जैसे राधा को कृष्ण की बांसुरी ने छेड़ दिया हो।

''चंद्रा! मैं शैल।''

चंद्रा चौंक गई, जैसे प्रेम लोक से लौटकर वास्तविक धरातल पर आ गई हो।

''इस पहाड़ के पीछे मेरा घर है। जब से तुम्हें देखा है, मैं तुम्हारे ही नाम की माला जपता हूँ।''

''पर क्यों, तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम?''

''तुम्हारी सहेलियाँ तुम्हें इसी नाम से तो पुकारती हैं, मैंने सुना है। चंद्रा! मैं तुम्हें प्यार करने लगा हूँ।''

''भूल जाओ मुझे! तुम मेरे भाई को नहीं जानते। वह प्रेम के नाम से नफरत करता है।''

''पर, चंद्रा .....'' चंद्रा पहाड़ों को लांघती नीचे उतर आई, सहेलियों के पास।

सहेलियाँ छेड़ रही थीं किन्तु, चंद्रा गुमसुम थी। शैल के आकर्षक व्यक्तित्व और प्रेम के दर्द में वह भी सम्मोहित हो गई थी।

क्या प्यार ऐसा ही होता है? मैंने उसे देखा और देखती ही रह गई। चंद्रा हर पल शैल से मिलने को आतुर रहने लगी और रोज उसी पहाड़ी पर उनका

मिलन होता। सूरज उनके प्रेम का साक्षी होता।

प्रेम की राह बहुत कठिन होती है। भाई को पता चला तो बंदिशें शुरू हो गईं। पर, शैल और चंद्रा एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। इधर शैल के माता-पिता भी इस प्रेम संबंध पर मोहर लगाने तैयार न थे। दोनों ने भाग कर प्रेम विवाह किया और एक अनजान इलाके में अपना घरौंदा बनाने के लिए आसाम निकल आये, गढ़वाल छोड़कर। दोनों चाय- बागानों में काम करने लगे। नई जगह, नये लोगों के बीच नया प्यार पलने लगा। जिंदगी गीत गाने लगी। चाय-बागानों में शैल-चंद्रा के प्यार के तराने गूंजने लगे। ब्रह्मपुत्र का वरदहस्त जैसे दोनों को मिल गया था। दो-तीन वर्ष गुजरे और चंद्रा ने एक बेटे को जन्म दिया, नाम रखा 'तारा', शैल-चंद्रा की आँखों का तारा। जिंदगी खेल रही थी, प्यार में पलती।

एक दिन ब्रह्मपुत्र के किनारे दोनों तारा को लिये घूम रहे थे, बैठे थे अपनी पुरानी यादों को ताजा करते। अचानक आंधी आई, तूफान सा चलने लगा। तट पर बैठे शैल का पैर फिसला और वह ब्रह्मपुत्र में चला गया। आंधी इतनी तेज थी कि चंद्रा देख ही न पाई, शैल कहाँ गया। वह तारा को चिपटाये थपेड़ों में दूर निकल गई। आवाज गूंजती रही शैल .... शैल ....।

आंधी थम गई किन्तु, शैल का पता न चला। तारा को लेकर चंद्रा तड़पती रह गई। कई दिन गुजर गए, उसका प्यार बिछुड़ गया। 24-25 वर्ष की चंद्रा दो वर्ष के तारा को लेकर जिंदगी कैसे गुजारेगी? लेकिन, संकट की घड़ी में चंद्रा जैसे स्वयं शैल बन गई थी, एक अडिग शिलाखंड, उसके इरादे मजबूत थे। वह तारा को पालेगी, 'मेरा प्यार सच्चा है, ब्रह्मपुत्र उसे नहीं निगल सकता'। किन्तु, फिर वह वास्तविकता में आ जाती, शैल अब मुझे नहीं मिलेगा। लेकिन, उसका मन स्वीकार नहीं करता कि शैल उसे छोड़कर चला गया है। समय किसी के लिए नहीं रुकता। चंद्रा चाय-बागानों में काम करती, सिर पर अवसाद की गठरी होती और तारा को पीठ पर बाँध लेती। उसे क्या पता था, दुखों का कुहासा और घना होने वाला है। अभी एक बरस ही गुजरा था, तारा खेल रहा था। चंद्रा उसके भविष्य के सपने बुन रही थी। अचानक दर्दीली चीख ने उसे झकझोर दिया। चीख तारा की थी। वह दौड़ी, तारा पहाड़ों से गिरता जा रहा था। उसे सर्प ने डस लिया था। चंद्रा पछाड़ खाकर गिर पड़ी। तारा का शरीर नीला पड़ गया। उसके मुँह से झाग निकलने लगा और वह भी चंद्रा को छोड़कर चला गया।

निपट अकेली चंद्रा! 'कहाँ जाये, क्या करे की ऊहापोह में।' चंद्रा जैसे पत्थर की मूर्ति बन गई थी, पत्थर की मूर्ति जिसमें कोई स्पंदन नहीं हो सकता। किन्तु, उसी पत्थर की पूजी जाने वाली मूर्ति ने ही तो उसे प्यार की खूबसूरत दुनिया में भेजा था। उसी ने एक बार फिर पत्थर बनी चंद्रा को स्पंदित किया। एक बार उसे लगा कि वह अपना जीवन भी ब्रह्मपुत्र को समर्पित कर दे। वह तट तक गई किन्तु, लहरों ने उसे वापस लौटा दिया ...., 'चंद्रा! तुम्हें अपने प्रेम को जीना है, उसके लिये जीना है। तुम तो शैलमय हो चुकी हो, लौट जाओ।'

चंद्रा ने आसाम छोड़ने का निश्चय किया, वह फिर गढ़वाल जायेगी जहाँ उसे शैल का प्रेम मिला था। वह उन पहाड़ियों से बातें करेगी जो उसके प्रेम की साक्षी थीं और एक दिन चंद्रा गढ़वाल आ गई। किन्तु, भाई और माँ-बाप से नहीं मिली। नाते-रिश्तेदार सब उसे हीन दृष्टि से देखेंगे। शायद कोई सहेली मिल जाये जो मुझ दुखयारी के दुःख को समझे। आख़िरकार उसकी एक सखी चित्रा उसे मिल ही गई। दोनों बिछुड़ी सहेलियाँ बिलख-बिलखकर रोईं, आपबीती सुनी, सुनाई। जब

आँसुओं का सैलाब रुका तो चंद्रा दृढ़ प्रतिज्ञ होकर बोली, ''चित्रा! मैं आगे पढ़ूँगी। ग्रेजुएट तो मैं हूँ ही, हिंदी में एम. ए. करूँगी। मैं अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूँ। दोनों सखियाँ एक साथ रहने लगीं। चंद्रा का दुःख अब कागज पर शब्दाकार लेने लगा। डायरी के पन्ने भरे जाने लगे। दिन कब होता, कब रात, उसे भान ही नहीं होता। एम. ए. हिंदी साहित्य पूरा किया, दोनों सहेलियाँ सिलाई कर गुजारा करने लगीं और चंद्रा ने एक प्रायवेट स्कूल में नौकरी भी ज्वाइन कर ली। समय इतना बेरहम भी हो सकता है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। चित्रा को एक महामारी ने जकड़ लिया। लाख कोशिशों के बाद भी चित्रा ना बच सकी। चंद्रा अब नितांत अकेली हो गई।

जिंदगी फिर सुगबुगाती है। एक रास्ता बंद होता है तो दूसरा जरूर खुलता है। 35-40 बरस की उम्र और पहाड़ सी जिंदगी, फिर अकेले जीने का निर्णय! चंद्रा की पहचान रचना, प्रकाशन के माध्यम से साहित्यकारों के बीच बन चुकी थी। उसने एक साहित्यिक पत्रिका निकालने का निर्णय लिया। पत्रिका निकालने का निर्णय चुनौतीपूर्ण अवश्य था किन्तु, अपनी भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाने और लोगों की जिंदगी के सुख-दुख जानने का इससे अच्छा तरीका उसे और कोई नहीं लग रहा था। चंद्रा ने बहुत से साहित्यकारों से संपर्क कर उनसे रचनाएँ आमंत्रित कीं। चूँकि अब चंद्रा जानी मानी साहित्यकार थी, अतः सभी साहित्यकारों ने उसका रचना और आर्थिक सहयोग कर पत्रिका निकालने में मदद की और अथाह दुःख के सागर में डूबने के बाद भी उसकी जीवटता को प्रणाम किया। पत्रिका को कुछ विज्ञापन भी मिले। शानदार पत्रिका तैयार थी जिसके लोकार्पण के लिए विभिन्न जगहों से साहित्यकार उपस्थित थे। जैसे ही पत्रिका का अनावरण हुआ, तालियों से सदन गूँज उठा। पत्रिका का नाम था, 'शैल चंद्रा'। इस सदन में उसका भाई भी उपस्थित था किन्तु, वह, चंद्रा से दृष्टि मिलाने की हिम्मत न कर पा रहा था। फिर भी उसने मिलने की धृष्टता की। चंद्रा मिली तो भाई उसकी कहानी सुनकर फफक-फफक कर रो पड़ा। उसने घर चलने की मिन्नत की किन्तु, चंद्रा अडिग थी। वह जानती थी, जब परिस्थितियाँ विपरीत होती हैं तो कोई सगे संबंधी, भाई- भौजाई साथ नहीं देते। उसने भाई से कहा, ''मैं अकेली कहाँ हूँ, शैल की स्मृतियाँ हैं ना मेरे साथ। वही मेरा संबल है। चंद्रा ने समय के अनुसार खुद को ढाल लिया। वह कंप्यूटर, लेपटाप में स्वयं टाइप करती। रचनाएँ भेजना, रचना शामिल करना उसने स्वयं सीखा। पत्रिका को निरंतर चलाने के लिए वह हर संभव प्रयास करती रही। एक शाम पहाड़ों के पीछे वह पत्रिका लेकर बैठ गई। सूरज अस्ताचल की ओर था। वह महसूस कर रही थी, शैल यहीं-कहीं है, जैसे वह अभी आकर पीछे से उसे बाहों में लेकर चूम लेगा। वह कहती, 'देखो न शैल, टुकड़ा-टुकड़ा धूप मैंने स्वयं बटोरी, माँगा नहीं आकाश किसी से, अपनी गुदड़ी ओढ़ी'। वह जैसे सचमुच शैल से मिलकर ऊर्जा से भर कर आ जाती।

समय गुजरता गया। एक बार एक फिल्म प्रोड्यूसर चंद्रा से मिलने आये। उसकी जिंदगी के मोड़ों से और उसकी संघर्षशीलता से वे बहुत प्रभावित थे। फिल्म प्रोड्यूसर उसकी सखी चित्रा के परिचित थे। उन्होंने चंद्रा से बात की कि वे उसकी जिंदगी पर एक फिल्म बनाना चाहते हैं। चंद्रा रूप- लावण्य की खान तो थी ही, साथ ही सौम्य और स्मार्ट भी। पहले तो उसने ना-नुकर की किन्तु जब उन्होंने कहा, 'आपको फिल्म में माँ के रूप में मुख्य भूमिका निभाना है तो वह तैयार हो गई। समय आने पर फिल्म तैयार हुई, 'द मदर लाइफ।' बड़े-बड़े पोस्टर में चंद्रा शहर में दिखाई

दे रही थी। चंद्रा फिर पहाड़ों की तरफ देखती, 'देखो शैल, तुम्हारी चंद्रा फिल्म-नायिका बन गई।' सफ़ेद बालों में उसके चेहरे से आकर्षक व्यक्तित्व झलक रहा था। चंद्रा ने कई उपन्यास, कहानी संग्रह और बच्चों के लिए भी लिखा। संस्मरण और आत्मकथ्य तो इतने चर्चित हुए कि लोगों ने हाथों-हाथ खरीदे।

कौन कहता है कि नारी अबला है? न केवल जीवन जिया चंद्रा ने बल्कि, पत्रिका के माध्यम से कइयों को जीने की राह दिखाई। समाज और मानव सेवा का इससे बढ़कर और क्या उदाहरण हो सकता है?

जिंदगी पटरियों पर दौड़ रही थी, लेकिन कब तक? अब चंद्रा 70 की वय पार कर चुकी थी, कुछ अस्वस्थ रहने लगी थी। उसने एक लड़के को सहारे के लिए रखा, उसे नाम दिया 'तारा'। वह अनाथ लड़का माँ की तरह चंद्रा की सेवा करता। पत्रिका प्रकाशन में भी सहायता करता। चंद्रा को कुछ दिनों से ज्वर ने पकड़ लिया था। डॉ. को दिखाया, किन्तु, कुछ असर न हुआ। पत्रिका का नया अंक आ गया था जिसमें चंद्रा का संस्मरण प्रकाशित हुआ था, 'अखंडित शैल।'

चंद्रा को अस्पताल में एडमिट करने के लिए डॉ. ने सलाह दी। तारा को डर था, कहीं वह फिर से अनाथ न हो जाये! उसकी आँखों से अविरल धारा बह रही थी। तारा ने अस्पताल में 'शैल चंद्रा' का नया अंक चंद्रा के हाथों में दिया। चंद्रा संस्मरण निकाल कर पढ़ने लगी। तभी चंद्रा ने, नर्स को कहते हुए सुना, 'एक मरीज कई महीनों से कोमा में था, आज ही उसे होश आया है।' वह 'चंद्रा-चंद्रा' पुकार रहा है। चंद्रा के हाथ कंपकपाने लगे, होंठ थरथराने लगे।

''क्या मैं उस मरीज का नाम जान सकती हूँ?''

नर्स ने कहा, ''एक सेठ उसके साथ आये थे भर्ती करने। वह कह रहे थे कि, उसे जब देखा तो वह अचेत था और उसकी स्मृति खो चुकी थी। उसे अपना नाम भी नहीं मालूम था। लेकिन, उसे वे अपने घर ले आये। कई वर्षों से वह उनके यहाँ काम कर रहा था, अचानक बेहोश हो गया, उसे यहाँ भर्ती किया, तब से कोमा में था।''

चंद्रा ने कहा, प्लीज मुझे उससे मिलाइये ना। नर्स ने कहा, ''मैं मरीज से बात करती हूँ।''

किन्तु, चंद्रा का हृदय धड़क रहा था। नर्स ने लाख मना किया, ''आप उठने की स्थिति में नहीं हैं, हाल ही में आपको अटैक आया है।'' पर चंद्रा तो जैसे किसी नेह-डोर से खिंची जा रही थी। उसने जब मरीज के पास जाकर देखा तो वह बूढ़ा मरीज जो 'चंद्रा-चंद्रा' पुकार रहा था, वही प्रेम दर्द से भरी आवाज ... ।

चंद्रा ''शैल'' कहकर उससे लिपट गई। उसके हाथ में 'शैल चंद्रा' पत्रिका थी,

''शैल मैंने तुम्हें खंडित नहीं होने दिया, ये देखो 'शैल-चंद्रा'। बूढ़े मरीज के कंपकपाते हाथ चंद्रा के कपोलों पर बहती धाराओं को सोख रहे थे, यह कहते हुए और ''तारा?''

उसने पास खड़े तारा की ओर इंगित किया। दोनों फूट-फूटकर रोये। आँसुओं की धारा आज ब्रह्मपुत्र बनकर शैल चंद्रा को अपने आगोश में ले जा रही थी सदा-सदा के लिए। अस्पताल में सन्नाटा छाया था।

असीम और मुक्त आकाश में सूरज आज फिर पहाड़ों से झांकता प्रेम का साक्षी बनकर क्षितिज में अस्त हो रहा था, धीरे-धीरे। चारों तरफ खड़ी भीड़ की ख़ामोशी में फिल्म प्रोड्यूसर भी था, उसने कैमरा क्लिक किया। सुखांत फिल्म का अंत करते हुए और तारा के कंधे पर हाथ रख दिया।

कटनी मध्य प्रदेश 9424914474
sudhaamrita.gupta@gmail.com

सुनो राजा भोज

डॉ.दिनेश पाठक 'शशि'

उसे अपने देश और देश में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए रखे गये पुलिस विभाग पर बड़ा नाज था। जब भी और जहाँ भी मौका मिलता वह इन दोनों की प्रशंसा करता फिर भी जब भी कोई चोरी-डकैती या गुंडई जैसी अप्रिय घटना घटित हो जाती तो उसे बड़ा अफसोस होता कि पुलिस विभाग के होते यह सब कैसे हो गया।

जब कोई उसे समझाता कि तुम किस सतयुग की बात कर रहे हो अब वह पहले वाली पुलिस नहीं रह गई है जो आम आदमी की रक्षा में अपनी जान तक दे देती थी अब तो पुलिस ही गुंडई करे और पुलिस ही गुण्डों की रक्षा भी, आम आदमी जाये भाड़ में।

सुनकर वह क्रोधित हो उठता, पर एक दिन की घटना ने उसके विश्वास को खंडित कर दिया। हुआ यह कि एक शराबी, गुंडा, शराब पीकर उसके घर में घुस आया और दो घंटे तक उसके घर में खूब उत्पात मचाता रहा, शाम को दफ़्तर से लौट कर जब उसे सारी बात की जानकारी मिली तो वह सीधा अपने क्षेत्र के पुलिस थाने पहुँचा और सारी घटना पुलिस इंसपेक्टर को बता दी।

उसकी बात सुनते ही इंसपेक्टर ने एक सिपाही को आदेश देकर उसे ही थाने के लॉकअप में बन्द करा दिया।

पुलिस के इस व्यवहार से वह हतप्रभ था उसने यह बताने की लाख कोशिश की कि दंगा उसने नहीं एक गुंडे ने उसके घर में घुसकर किया था लेकिन पुलिस ने उसकी एक नहीं सुनी

सुबह होते ही पुलिस ने उसे हथकड़ी लगाई और कचहरी ले गई।

उसने अपनी जानकारी के अनुसार पुलिस से बहुतेरा प्रतिवाद किया कि नियमानुसार किसी परिवारीजन को सूचित किए बिना आप उसे रातभर थाने में बन्द करके नहीं रख सकते और न ही हथकड़ी ही लगा सकते लेकिन पुलिस ने उसकी एक नहीं सुनी और पुलिस के आगे उसके ज्ञान की पोथियाँ धरी की धरी रह गईं।

उसे आभास हो गया कि पुलिस के डंडा छाप व्यवहार के आगे सरकार के सभी नियम कानून बेकार हैं, उसका विश्वास चूर-चूर होकर बिखर गया था। सामने खड़े इंसपेक्टर और सिपाही ही नहीं आज सारा का सारा थाना उसे गुंडों का जमावड़ा लग रहा था।

28, सारंग विहार, मथुरा-281006
मो.09412727361 एवं 09760535755
ईमेल- drdinesh57@gmail.com

वह दस वर्ष का लड़का

-रमेश चन्द्र

मडगाँव स्टेशन पर रेलवे पुलिसकर्मी देखते थे कि दस वर्ष का एक बालक रोज स्टेशन पर पलक झपकते आता है और पलक झपकते गायब हो जाता है। वह जब दिखाई देता, तो वे उसकी चुस्ती-फुर्ती और चीते की-सी दौड़ देखकर हैरान रह जाते। लोग अपना काम छोड़ उसी को देखने लगते।

रेलवे स्टेशन पर उसकी उपस्थिति किसी कौतुहल से कम न होती। वह केवल सुपर फास्ट ट्रेनों के समय आता और उनके दो-चार मिनटों के स्टॉप के दौरान वह पूरी ट्रेन पर धावा बोल देता और वापसी में एक थैली हवा में लहराता हुआ एक किलोमीटर दूर अपनी झोंपड़ी की तरफ दौड़ जाता, जहाँ उसकी लंगड़ी माँ और दो छोटी बहनें उसका इंतजार कर रही होतीं। यह किसी को न पता चलता कि वह किसी के डर से भाग रहा है या भूख के कारण। जो भी हो, जब वह झोंपड़ी में पहुँचता तो उसकी माँ और बहनें उसकी हवा में लहराती थैली को चमकती आँखों से देखतीं और झोंपड़ी के निकट आते ही उस पर टूट पड़तीं। फिर वे सब मिलकर बड़े चाव से उसमें पड़े आइसक्रीम के झूठे कपों, रोटयों के टुकड़ों, अचार आदि का आनंद लेते और जिंदगी का एक और लमहा खुशी से काट लेते। उस पल उनकी ज़िन्दगी की पहली जरूरत पूरी होती थी। कुछ देर आराम करके वह लड़का अपनी बहनों से लड़ाई-झगड़ा कर मन बहलाता और आउटर पर अगली सुपर-फास्ट ट्रेन की सीटी सुनकर लड़ाई को अचानक छोड़ रेलगाड़ी से पहले स्टेशन पर जा पहुँचता। उसमें अपने काम के प्रति इतनी ज्यादा लगन देख उसकी माँ भगवान से प्रार्थना करती कि उसे किसी की नजर न लगे।

माँ को अपने उस बेटे पर बड़ा नाज था। वह एक ही तो था, जो पूरे परिवार का जीवन-यापन कर रहा था। उसके पिता तो बीमारी के कारण न जाने कब के स्वर्ग सिधार चुके थे। उसकी माँ को हर पल उसी की चिंता रहती। रात की ग्यारह बजे की ट्रेन के बाद जब तक वह लौट न आता, वह उस कोमल जान के लिए भगवान से दुआएँ मांगती रहती।

स्टेशन पर खड़ा आरपीएफ का सिपाही उस लड़के को देखता तो उसे अपनी ड्यूटी का भान हो जाता और ट्रेनों में चोरियाँ रोकने के लिए उसे डाँट मारकर बुलाता, परंतु वह डर के मारे कभी उसके पास न जाता। अपनी आज्ञा की अवहेलना देख सिपाही को गुस्सा आ जाता। वह उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ पड़ता। उस रद्दी बीनने वाले छोटे-से लड़के के पीछे सिपाही को दौड़ता और पिछड़ता देख सभी यात्री और स्टेशनकर्मी उसका मज़ाक उड़ाते। सिपाही द्वारा न पकड़े जा सकने के कारण अब उस लड़के का डर इतना खुल गया था कि वह सिपाही के सामने से ही दौड़ जाता।

एक दिन सिपाही ने अपने एक साथी के साथ मिलकर उसे पकड़ ही लेने की ठान ली। दोनों स्टेशन पर इस प्रकार थोड़ी-थोड़ी दूर पर छिप गए, जैसे बाली का वध करने जा रहे हों। लड़का एक सिपाही के पास पहुँचते ही सिपाही उसके पीछे दौड़ पड़ा और दूसरे सिपाही के लिए सीटी बजा दी। लड़के ने अचानक अपने सामने दूसरा सिपाही खड़ा देखा। बचने का कोई उपाय न देख वह फुर्ती से स्टेशन पर खड़ी ट्रेन के डिब्बों के नीचे से दूसरी ओर निकल भागा। फिर उसका पता नहीं लगा कि वह कहाँ गया। जब रेलगाड़ी स्टेशन से चली गई तो उन्होंने उसे रेलवे पुल के दूसरे कोने से नीचे उतरते देखा। दोनों उसे आँख फाड़कर देखते रह गए। उस दिन आरपीएफ में दोनों सिपाहियों का खूब मज़ाक उड़ा। लड़का कोई ऐसा अपराध भी नहीं कर रहा था जिससे और पुलिस फोर्स लगाई जाती।

उस छोटे-से लड़के के कारण पुलिस में सिपाही का मान बहुत गिर गया था। इसलिए वह मन ही मन उसे पकड़ने की ठाने हुए था। एक दिन उसने स्टेशन से एक किलोमीटर दूर उस लड़के को थैली

सहित अपनी ओर बिना डर के दौड़ते आते देखा। आज उसकी बाछें खिल गईं। लड़का ज्यों ही उससे थोड़ी दूर रह गया, वह उसे पकड़ने दौड़ा, पर लड़का सांप की-सी गति से अपनी झोंपड़ी में घुस गया। वह बाल-मन समझा कि सिपाही उसकी झोंपड़ी में नहीं आएगा। परंतु सिपाही अपनी हार को पचा नहीं सका और उसके पीछे-पीछे झोंपड़ी में घुस गया। वह लड़के को पकड़कर बाहर खींचने लगा। तभी लड़के की माँ उसे छुड़ाने लगी। लड़का सिपाही से छूटकर फिर भाग गया। सिपाही ने देखा कि वह भिखारिन अपने मैले-कुचैले कपड़ों में एक सुंदर बदन छिपाए हुए है। वह उस पर टूट पड़ा। अब उन दोनों में मल्ल-युद्ध आरंभ हो गया। भिखारिन ने शोर मचाना शुरू कर दिया। शोर सुनकर सभी झोंपड़ी वाले निकल आए। सिपाही जान बचाकर भागा और फिर आने की धमकी देकर चला गया।

सिपाही के जाने पर भिखारिन और उसके बच्चे सहमकर अपनी झोंपड़ी में बंद हो गए। परंतु भूख को कब तक बर्दाश्त करते? अगले दिन लड़के की माँ उसके साथ हो ली। दोनों डरते हुए इधर-उधर देखते हुए जा रहे थे। उन्हें स्टेशन पर कोई सिपाही दिखाई नहीं दिया। तभी एक ट्रेन आकर वहीं खाली हो गई। वे दोनों डिब्बे के अलग-अलग दरवाजों से चढ़कर सामान इकट्ठा करने लगे। थोड़ी देर में ट्रेन चल पड़ी। थैली भरकर लड़का उतरने ही वाला था कि उसे ट्रेन में सिपाही चढ़ता हुआ दिखाई दिया। सिपाही बाज की-सी गति से उस पर झपट पड़ा। लड़का भी कम न था। वह बंदर की चुस्ती से पिछले दरवाजे की ओर मुड़ा। परंतु आज सिपाही में भी कुछ अधिक जोश था। सिपाही को अपने पीछे तेजी से आते देख लड़का चलती ट्रेन के दूसरे डिब्बे से कूद गया। सिपाही भी खुश हो उसकी माँ पर झपट पड़ा। तभी लड़के को माँ की याद आई। वह तेज होती ट्रेन के डिब्बे के डंडे से यह कहते हुए उछलकर झूल गया माँ मैं आ रहा हूँ। परंतु डंडे से उसकी पकड़ मजबूत नहीं हो पाई। वह फिर ट्रेन से गिर गया और ट्रेन के साथ लुढ़कता-पुढ़कता एक जगह निर्जीव होकर रह गया।

उस दिन के बाद वह लड़का कभी स्ट्टेशन पर नहीं दिखाई दिया। वह सिपाही के कभी हाथ न आया, परंतु उसने अपनी माँ के लिए अपनी जान दे दी। स्टेशन पर खड़ा वह सिपाही मन ही मन सोच रहा था यह लड़का किसी अमीर घर से होता तो आज किसी ओलंपिक में भाग ले रहा होता और मैं इसकी सुरक्षा कर रहा होता!

मकान नं. 1116, ई.एस.आई.
अस्पताल के पीछे,
सेक्टर 9-ए, गुरुग्राम-122001

पिता और बच्चा

Father and Child

by William Butler Yeats

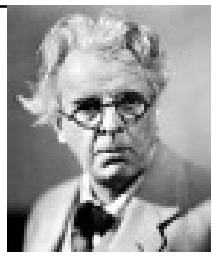

जब-जब भी प्रतिबन्धों का
रहस्य खोला है
नारी बँधी हुई है इनसे
बालक ने यह बोला है
अच्छी महिलाएँ भी
पुरुषों के अधीन हैं
कहने को स्वाधीन
मगर सब पराधीन हैं
थामा हाथ पुरुष का
महिलाओं ने जब-जब
दुर्व्यवहार बदले में पाया
उसने तब-तब
सबको उसका रूप
और यौवन ही भाया
आँखों को शीतल हवा
और बालों को सुन्दर बतलाया

(अनुवाद-डॉ.रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक')

अमर भारती चिकित्सालय,
टनकपुर रोड, खटीमा,
जिला ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

हरसिल गाँव और महापंडित राहुल सांकृत्यायन की कुटिया

-श्रीमती संतोष बंसल

उत्तरकाशी में कंक्रीट के मलबे को देख मन में उस प्रलय का बिम्ब बार-बार उभर रहा था और यही ख्याल आ रहा था कि पहाड़ों की खूबसूरत दुनिया को इंसान अपने ही हाथों उजाड़ रहा है। इस कटु चित्र को लिए हम बस से आगे बढ़ते हुए रात होने से पहले हर्षिल पहुँचने की फ़िक्र में थे। शाम के लगभग चार-साढ़े चार का समय था कि हम ऐसे स्थल पर पहुँचे, जो कुदरत का बेहतरीन नगीना था। सामने दूर ऊँचाई पर पहाड़ों के ऊपर सफ़ेद बर्फ सूरज की किरणों में रुपहली होकर चमक रही थी, उसके साथ ही बादल भी धुनी रूई के से गोले बनकर आसमान में तैर रहे थे और इन सबके बीच सूरज जैसे एक सितारे की तरह सुनहरा सतरंगी बिम्ब बना रहा था। यह चित्र वैसा ही था, जैसा कि हम बचपन में सूरज को रेखांकित करने के लिए बीच में गोला और फिर उसके चारों तरफ किरणों की रेखाएँ खींच देते थे। यह टकनौर ग्राम था, जो नीचे तलहटी में बसा था। लेकिन जहाँ हम खड़े थे, वहाँ से बहुत नीचे था वह, जहाँ कई जल धाराएँ पहाड़ों से निकल कर बह रही थीं। हमारे सामने सड़क के उस पार सेब के छोटे-छोटे पौधे लगे थे, जिनमें फल लगने के लिए अभी कई वर्ष लगेंगे। लेकिन इस जगह लाल राजमा की खेती बहुत अधिक मात्रा में होती है और यह यहाँ से पूरे भारत में जाता है।

विश्राम स्थल पर खड़े होकर नीचे हरी-भरी घाटी की ओर झांका तो बचपन में देखी फिल्म 'गीत' का वह गाना ''आजा तुझको पुकारे मेरे गीत'' मन में गूंजने लगा। पहाड़ी पोशाक में बांसुरी

मि यानी 'लोकेशन' हमसे पूर्व इस ओर ताया कि यहाँ हर्षिल म फिल्म 'राम तेरी ग हुई थी। उन्होंने यह यह स्थान विशेष प्रिय वाली पर्वत श्रृंखला और आगे बढ़ते हुए गौमुख है, जहाँ के ग्लेशियर से गंगा निकलती है।

हमने उस दृश्य को देखने के लिए सिर ऊपर उठाया तो निगाह थम कर रह गयी। पहाड़ों पर बिछी बर्फ से उठती धुंध की लहरें जैसे अपनी लय और गति से गीत-संगीत बुनती हुई चित्रों की विविध छवियों की अपार छटा बिखेर रही थीं। अगर कल्पनाओं के घोड़े दौड़ाएँ तो उन रूप बदलती रेखाओं में असंख्य भाव चित्रों को देखा जा सकता

था। उनमें पहाड़ों की परियाँ भी निहारी जा रही थीं, तो स्वर्ग की अप्सराएँ भी रथ पर सवार देखी जा सकती थीं। वह शब्दातीत दृश्य था, जिसे वर्णित नहीं किया जा सकता। वहाँ से बस में आगे बढ़ते हुए हम करीब पाँच बजे हर्षिल पहुँचे, तब तक सूरज छिप गया था। पुलिया पार करते हुए पानी के तेज शोर से यह ज्ञात हुआ कि हम गाँव की सरहद में प्रवेश कर चुके हैं। एवं पानी की यह तेज धारा भागीरथी नदी की थी, जो अब बस में बैठे हुए सिर्फ सुनाई दे रही थी। चूँकि भारतीय सेना की छावनी भी हर्षिल के ही इलाके में है, इसीलिए उसी सड़क पर मिल्ट्री के बहुत से ट्रक खड़े थे। सड़क के दोनों ओर छुटपुट दुकानें थीं, जिनमें रोजमर्रा की जरूरत का सामान ही बिकता है। चूँकि रात होने वाली थी, इसीलिए हमने जल्दी से होटल में अपना सामान छोड़ा और गर्म कपड़े पहनकर अपने ग्रुप के साथ जल्द ही बाहर निकल आये। वहाँ से कुछ ही दूरी पर चौक से आगे खुला स्थान था, जहाँ एक बहुत पुराना वटवृक्ष था, जिस पर बहुत-सी लाल झंडिया लगी हुई थीं। अगर हम किसी स्थान पर जाएँ, तो तभी वहाँ के लोक जीवन की सही पहचान होती है। वह एक ऐसा चौराहा था, जहाँ से कई दिशाओं के मार्ग गुजर रहे थे। बाईं तरफ सड़क पर थोड़ा आगे बढ़ने पर एक पुल नजर आया, जो दोनों तरफ ऊँची लोहे की मजबूत

सलाखों से ढका था। इसी बीच हलकी-हलकी बूंदा बांदी शुरू हो गयी, जिससे बचने और नदी को नजदीक से देखने के लिए हम सभी लोग पुलिया के नीचे उसकी दीवार की ओट में खड़े हो गए। पत्थरों के बड़े-छोटे असंख्य टुकड़ों के बीच साफ़ स्वच्छ धारा कुलांचें भर रही थी। यह पूरा स्थान एक कटोरे की तरह था, जिसका इधर का हिस्सा पूरी तरह पत्थरों से पटा हुआ था और उधर गाँव तथा छावनी बसी थी। ऐसा लग रहा था मानो कोई बड़ा पहाड़ टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो प्रचंड जलधारा के साथ बहता हुआ यहाँ आकर फ़ैल गया हो।

हर्षिल वासी इसे विष्णुगंगा या कंकड़ गंगा के नाम से बुलाते हैं, यह धारा भागीरथी से भिन्न अलग 'कन्दोमती पर्वत' से निकलने वाली धारा है। इसके पीछे एक पौराणिक कथा है, जो अभी तक हमने सरसरी तौर पर कार्तिक माह में देव उठानी एकादशी के दिन तुलसी विवाह पर पुरोहितों से सुनी थी। इस कथा में तुलसी का विवाह शालिग्राम से होता है, जो विष्णु के ही रूप हैं। किन्तु इस स्थल पर उसके साक्ष्य उस कथा से कैसे सम्बंधित हैं? यह मैं देख और जाँच रही थी। दूसरे किसी ने इसका नाम

कंकड़-गंगा ठीक ही रखा था, क्योंकि चारों ओर बड़े-छोटे गोल कंकड़ ही फैले हुए थे। इस आधे किलोमीटर का सारा स्थल इसी तरह का था, संभवतः नदी में जल की मात्रा बढ़ने पर इस पूरे मैदान में भर जाता होगा। हम सभी को 'गंगा बचाओ' अभियान के अध्यक्ष श्री निलय उपाध्याय जी अपनी अगुवाई में इससे आगे ले गए। अब तक उबड़-खाबड़, लेकिन समतल मैदान था। तभी एक उठी हुई मेढ़ सी दीवार दिखी, जो उस घाटी से थोड़ी ऊँचाई पर थी। यहाँ भी एक छोटी पुलिया थी, जो दोनों ओर से लोहे की ऊँची जाली से घिरी थी, जिससे हम नीचे झाँक पाने में भी असमर्थ थे। इस नदी का सम्बन्ध भी उसी पौराणिक कथा से जुड़ा है एवं इसे जालंधरी या जलद्री नदी के नाम से जाना जाता है। निलय जी ने यह भी बताया कि इसी गाँव में वह प्राचीन लक्ष्मी नारायण मंदिर है, जहाँ विष्णु देवता जालंधर की पत्नी वृंदा द्वारा शाप ग्रसित होकर शिला बन गए थे और हरि यानी विष्णु के शिला बनने की वजह से ही इस गाँव का नाम 'हरसिल' पड़ा। चूँकि यह सब सुनने में इतना रोचक लग रहा था कि इस पौराणिक कथा को पूर्ण रूप से जानने की मेरी इच्छा बनी रही। यह सारा वृत्तांत यात्रा के कई वर्षों बाद अब जान पाई हूँ, जिसका विवेचन मैं आगे करूँगी। उस समय तो यह भी सुना कि इसके पार 'भोटिया' लोग रहते हैं, जो मूलतः तिब्बती हैं और बहुत पहले से यह रास्ता व्यापार के लिए प्रयुक्त होता रहा है। तिब्बत के इसी रास्ते से महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन जी हर्षिल आये थे, यहाँ उन्हें इतना अच्छा लगा कि उन्होंने लम्बा अरसा यहाँ गुजारा।

चूँकि रात घिर आई थी और ठण्ड भी ज्यादा थी, दूसरे अगले दिन सुबह ही हमें गंगोत्री के लिए प्रस्थान करना था इसीलिए हम लोग होटल लौट आये और अगले दिन तड़के ही गंगोत्री के लिए चल दिए। रस्ते में गंगनानी के निकट पहुँचते ही इस रास्ते और स्थान का भूगोल कुछ भिन्न नजर आने लगा। अब हम पहाड़ के साथ बहुत ऊँचाई पर जा रहे थे। गंगा की धारा उन पहाड़ों के बीच संकरी खाइयों से गुजर रही थी, जिनमें आस-पास की अन्य जल धाराएँ भी मिलती रहती हैं। तभी हम रास्ते में पड़ने वाले एशिया में सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित पुल को देखने के लिए उतरे, तो उसके बिलकुल नीचे एक अन्य प्राचीन लकड़ी का छोटा पुल भी नजर आया। हमारे साथ मौजूद मित्रों ने अपना कैमरा निकाल कर उस स्थान की फोटोग्राफी की और तभी पता चला कि नीचे धारा के बिलकुल नजदीक दिखाई देने वाला लकड़ी का पुल स्थानीय लोगों तथा गंगोत्री जाने वाले यात्रियों के लिए अंग्रेज विलसन ने ही बनवाया था। लेकिन इस पहाड़ को पार करने के लिए बहुत लम्बा रास्ता तय करना पड़ता था, इसीलिए नए 'कैंटीलीवर ब्रिज' का निर्माण हुआ। जो इन पहाड़ों के ऊपरी हिस्से पर मध्य में बना लोहे का भारी भरकम ढाँचा है। पुल के दोनों तरफ झाँकने पर आगे-पीछे बहुत ही गहराई में बहती गंगा की क्षीण सी जलधारा दिखी। यहाँ चारों तरफ ऊँचे पहाड़ों और नीचे बनी कुदरती खाइयों को देख अचानक दिमाग में परमात्मा शिव द्वारा अपनी जटाओं में गंगा के वेग को धारण कर उसे पृथ्वी पर उतारने की बात समझ में आई। साथ ही प्रसिद्ध साहित्यकार डॉक्टर हजारीप्रसाद दिवेदी की हिमालय क्षेत्र को शिव की जटाओं की अवधारणा मानना बिलकुल उचित लगा। वास्तव में यदि हम ब्रह्माण्ड के अक्स को शिव रूप में मानकर कैलाश को उनका सिर तथा इस क्षेत्र में फैली धाराओं को उनकी जटाओं के रूप में माने तो वह बिम्ब सही लगता है और फिर हरिद्वार क्षेत्र में जाकर वह मैदानी इलाकों में गंगा नदी के रूप में बहने लगती है। हमारे ऋषि-मुनियों में भौगोलिक

तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए कितना सुंदर कथात्मक रूप दिया है, यह यहाँ देख कर और उनके अर्थ जान कर आसानी से समझा जा सकता है।

खैर, हम लोग गंगोत्री धाम के दर्शन करके दोपहर दो बजे तक हर्षिल लौट आये और तब यह तय किया गया कि चार बजे यहाँ के मंदिर के दर्शन के साथ उसके प्रांगण में ही कवि गोष्ठी का आयोजन होगा। हम लोग समयानुसार होटल से निकले और गाँव के थोड़ा बाहर की ओर सेब के कतारबद्ध बगीचों के समीप बने लक्ष्मी नारायण मंदिर गए। मंदिर में प्रवेश करते हुए चारों तरफ फूलों के असंख्य पौधों के साथ एक ताल में कमल के बहुत से नीले फूल मैंने यहाँ पहली बार देखे। मंदिर में सचमुच वह शिला मौजूद थी, जिसे विष्णु द्वारा जालंधर की पत्नी वृंदा यानी जालंधरी के शील भंग होने पर उसके द्वारा उन्हें शापित कहा जाता है। यद्यपि यह कथा बहुत लम्बी है, किन्तु इसका महत्व और अर्थ प्रकृति के चौमासा चक्र से ही सम्बन्धित है। वर्षा ऋतु के इस पूरे क्रम को समझाने के लिए ही इस गाथा का ताना बाना बुना गया है। हुआ यह कि इंद्र के घमंड से क्रुद्ध शिव भगवन ने अपना तेज पुंज क्षीर सागर में डाल दिया, जिससे उन्हीं के अंश जालंधर की व्युत्पत्ति हुई। जालंधर अत्यंत बलशाली था और उसकी पत्नी वृन्दा विष्णुभक्त और अत्यंत पतिव्रता स्त्री थी। चूँकि सिंधुपुत्र जालंधर शक्तिशाली था और उसने सभी देवताओं को युद्ध में हराकर समुद्र मंथन से प्राप्त उनके रत्न आदि पर अधिकार कर लिया था। इसीलिए सभी देवता बैकुंठ में विष्णु देवता के पास गए और उनसे मदद की प्रार्थना की। विष्णु अपने गरुड़ पर बैठ युद्धभूमि में जाने लगे तो समुद्र तन्या लक्ष्मी ने अपने भाई जालंधर की प्राण रक्षा की याचना की। तब विष्णु ने पत्नी लक्ष्मी को उसके प्राणों का वचन दे युद्धभूमि की ओर प्रस्थान किया। वहाँ दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ, किन्तु अंत में मायावी विष्णु ने मेघवानी में जालंधर से वर मांगने को कहा। तिस पर जालंधर ने उनसे अपनी बहिन लक्ष्मी और सारे कुटुम्बियों के साथ उसके घर पर निवास करने का वर माँगा।

अगर प्रकृति चक्र से समझा जाए तो आषाढ़ मास की एकादशी से देव शयन शुरू हो जाता है और भगवन शिव सृष्टि चक्र का कार्य स्वयं संभाल लेते हैं। जो कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधनी एकादशी पर देव उठने तक रहता है। इस बीच सारे देवताओं ने शंकर भगवान से विष्णु के पाताल निवास और अपने परवश होने की बात कह दुःख बताया, तब शंकर भगवान ने स्वयं उसके वध करने की बात कही। इधर नारद की बातों में आकर जालंधर अपनी ही माता पारवती पर कुदृष्टि डालता है, जिससे रुष्ट हो गौरी विष्णु को दैत्य जालंधर की पत्नी के पतिव्रत को भ्रष्ट करने की आज्ञा देती है क्योंकि अजेय जालंधर को युद्ध में तभी कोई मार पायेगा। इस आज्ञा के तहत विष्णु जालंधर का रूप धर उसकी पत्नी वृंदा के समक्ष जाते हैं, किन्तु उसे पहचान कर वृंदा उन्हें शिला होने का शाप देकर पतिव्रता वृंदा अग्नि में प्रवेश कर गयी और युद्धभूमि में शंकर भगवान ने अपने सुदर्शन चक्र से जालंधर का खात्मा किया। तब ब्रह्मा देवता वृंदा की चिता भूमि पर कुछ बीज डाल देते हैं, जिससे तुलसी का जन्म हुआ और वृंदा की भक्ति से मोहित विष्णु उसे यह वर देते हैं कि वे शालिग्राम के रूप में उनसे विवाह करेंगे, तभी कार्तिक में तुलसीदल से विष्णु देवता की आराधना होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्षा ऋतु में समुद्र में उठने वाले ज्वार या तूफ़ान बेहद विध्वंसकारी होते हैं। जिन्हें कोई नर या नारायण काबू में नहीं कर सकते और वे उस पूरे काल में पाताल में राजा बलि के यहाँ, यानी पृथ्वी के नीचे के संसार के

साथ निवास करते हैं। ऐसे समय सृष्टि का संचालन परमात्मा शिव के नियंत्रण में रहता है और तुलसी की पौध जो सावन में बोई जाती है, उसकी पूजा यानी उपयोग सर्दियों की शरुआत से ही स्वास्थ्यकारी होता है। लेकिन अचरच की बात है कि अब यह सारा कथाक्रम ढकोसलों और कर्मकांडों में तब्दील हो गया है। इसके वास्तविक अर्थ से कोसों दूर है आम जनजीवन?

खैर उस पौराणिक महत्व वाले छोटे मंदिर के सामने बने नए मंदिर का निर्माण सन 1883 ईस्वी में किया गया था और इसी के पीछे भागीरथी नदी और जालंधरी नदी का संगम होता है। इन दोनों धाराओं के मिलने से यहाँ नदी का वेग तेज और प्रवाह फैला हुआ था, जिसकी कल-कल ध्वनि और पत्थरों पर पछाड़ खाती लहरों की आवाज हमें सुनाई दे रही थी। नदी के इस पार पानी की बूँदे उछल कर फुहार-सी बरस रही थीं, तो उस पार पहाड़ों पर ऊँचे देवदार वृक्षों के साथ पूरा वातावरण हरा-भरा नजर आ रहा था। यह दृश्य देखकर मुझे हर्षिल को मिनी स्विट्जरलैंड कहने की बात समझ में आई। अपना रास्ता खुद बनाती हुई निर्बंधन नदी का असली कुदरती रूप तो पहाड़ों में ही दिखता है, नहीं तो अभी तक हर जगह गंगा नदी का बांधों में बंधा शिथिल मायूस रूप ही नजर आया था। दोनों मंदिरों के मध्य पीछे दिखने वाली कुटिया में ही हिंदी के प्रकांड विद्वान और यायावर श्री राहुल सांकृत्यायन जी ने काफी समय गुजारा था। हम सभी गंगा मित्रों ने उसके सामने ग्रुप फोटो खिंचवाई, जो हम सबके लिए अमिट स्मृति है और फिर वहाँ से बगीचे के बीचों-बीच बड़ी दरी बिछाकर कवि गोष्ठी आयोजित की गयी। इस आयोजन में निलय भाई, श्री ध्रुव गुप्त, पुष्पा पटेल, रविकेश मिश्रा जी, विजेंदर कुमार और भी बहुत से पटना से आमंत्रित साहित्यिक लोग थे। यह अनुभूति ही अपने आप में उस गोष्ठी को ऊँचा दर्जा प्रदान कर रही थी कि हम पुरोधा साहित्यकार की कुटिया के सम्मुख, यहाँ काव्य पाठ कर रहे हैं। अद्‌भुत रस बह रहा था, जिसमें सभी सारोबार हो रहे थे। तभी वक्त के अहसास के साथ सभी उठ खड़े हुए और एक दूसरे की रचना पर चर्चा करते हम होटल लौट आये। लेकिन मैं और मेरे पति चाय पीकर संध्या के समय छावनी की तरफ पैदल निकल गए, जो हर्षिल की सीमा रेखा 'भागीरथी नदी' के निकट ही थी।' क्रिस्टल यानी 'पारदर्शी' साफ़ स्वच्छ जल की धारा लिए यहाँ भागीरथी का सौम्य और शालीन बहाव था, जिसके साथ ही पीछे की तरफ सेना की छावनी बनी हुई थी। पता लगा कि यहाँ चीन का बॉर्डर पास होने के कारण 'गढ़वाल स्काउट्स' एवं 'इंडो तिब्बतन बॉर्डर पुलिस' के बेस कैंप बने हुए हैं। उन्हीं के बीचों-बीच एक पथरीली पटरी पर चलते हुए हमने वहाँ एक डिस्पेंसरी भी देखी, जहाँ इस समय केवल एक चौकीदार था। पूछने पर उसने बताया कि यहाँ डॉक्टर भी नियुक्त हैं, जो दो किलोमीटर दूर धराली गाँव में निवास

सफल और सार्थक कवि गोष्ठी के उपरांत गंगा मित्रो के साथ ली गई तस्वीर

करते हैं। लेकिन एमरजेंसी सर्विस के लिए दूर तक काई अस्पताल नहीं है। ऐसे में उत्तरकाशी ही जाना पड़ता है। कहीं-कहीं बकरियाँ बंधी हुई थीं, सम्भवतः यहाँ दूध की पूर्ति इनसे होती होगी। आसपास ज्यादतर कैंप ही लगे हुए थे, फिर अँधेरा घिरता देख हम लोग लौट आये। चूँकि अगले दिन हमें नाश्ते के बाद हरिद्वार लौटना था, इसीलिए सुबह ही हमने सैर के बहाने यहाँ आस-पास घूमना तय किया। एक तो मैं मुखबा ग्राम देखना चाहती थी, जहाँ दीपावाली के बाद देवी गंगा की मूरत यहाँ उनके मायके में लाई जाती है। इस बीच शीत ऋतु में गंगोत्री धाम के कपाट बंद होने से यहीं गंगा देवी की आराधना होती है और सर्दियाँ समाप्त होने के बाद गाँववासियों द्वारा गाजे-बाजे के साथ उन्हें डोली में विदा किया जाता है। फिर ज्येष्ठ मास में गंगा दसहरा के अवसर गंगा के पृथ्वी अवतरण के उत्सव पर उत्तराखंड के सभी निवासी गंगोत्री धाम जाते हैं। मुझे याद आया कि तीन दिन बाद ही गंगा दसहरा है, सम्भवतः इसीलिए रास्ते में हमें स्थानीय निवासियों का हुजूम गाते-बजाते गंगोत्री की तरफ जाते हुए नजर आया था।

दूसरे मुखबा गाँव से ही ब्रिटिश भगोड़े सेनानी फ्रेडरिक विल्सन की कहानी जुड़ी हुई है, जिसने अपने विश्वस्त मुलाजिम मंगतू चंद की खूबसूरत कन्या 'रैताला' से विवाह किया था। किन्तु संतान न होने पर उसने मंगतू की ही बहन गुलाबी से दूसरा विवाह किया, जिससे उसके तीन बच्चे पैदा हुए थे। किन्हीं कारणों से सन् 1857 ईस्वी में फ़ौज से निष्कासित हो, वह बचता छिपता दुर्गम पहाड़ी रास्ते से यहाँ गढ़वाल पहुँचा था। फिर हर्षिल में ही निवास करते हुए इतना शक्तिशाली बन गया था कि उसने अपनी अलग मुद्रा यानी ताम्बे के सिक्के बनवा लिए थे, जो स्थानीय स्तर पर प्रयोग में भी आने लगे थे। 'पहाड़ी राजा' और 'हुलसिन साहेब' के नाम से विख्यात विल्सन ने जल्द ही सन 1864 में यहाँ अपनी कॉटेज बना ली थी, किन्तु वह जलकर ख़ाक हो गयी। इतने प्रभुत्वशाली व्यक्ति के धनी विलसन ने ही सेब और राजमा तथा आलू की फसल की तकनीक यहाँ के निवासियों को मुहैया कराई। उसने सारे जंगलों को काटने के साथ ही पशुओं की खाल एवं कस्तूरी इत्यादि का भी व्यवसाय किया। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के प्रयोग से वह भागीरथी नदी के बहाव के साथ साल की लकड़ी को हरिद्वार तक भेज देता और फिर उसके आदमी उन्हें एकत्रित कर सरकार को बेच देते थे। उसी लकड़ी की 'स्लैब्स' उस समय बन रही भारतीय रेल की पटरियों में लगाईं गयी। अंततः वह इतना शक्तिशाली हो गया था कि टिहरी के नरेश भवानी शाह का भी उस पर नियंत्रण न रहा। तथा मंसूरी में उसने 'चार्ली विला' नामक होटल भी बनाया था, जिसमें आजकल भारतीय प्रशासनिक सेवा की ट्रेनिंग के लिए लाल बहादुर शास्त्री एकेडमी है। मसूरी में ही उसकी कब्र है और वहाँ रह रहे अंग्रेज लेखक रस्किन बांड उसके जीवन पर किताब लिखना चाहते थे, किन्तु पर्याप्त जानकारी उपलब्ध न होने से वह अधूरी रह गयी।

अगली सुबह जल्दी ही हम मुखबा गाँव के पहाड़ी रास्ते की ओर चल दिए। बिलकुल कच्चे पथरीले पथ पर सँभल-सँभल कर चलते हुए हम गोल-गोल

घूम रहे थे और पहाड़ों का चिरपरिचित कोहरा और किसी भी आदमी की आवा-जावी न होने से सुनसान सा माहौल लग रहा था। हमें बार-बार यह महसूस हो रहा था की कहीं हम गलत दिशा में तो नहीं जा रहे? फिर सोचा कि अगर सही नहीं हुआ तो वापिस लौट आएंगे, पहाड़ पर सैर ही सही। लेकिन लगभग दो किलोमीटर चलने के बाद हम रास्ते के जिस मुहाने पर पहुँचे, वहाँ से नीचे न केवल गंगा की धारा दिखी, बल्कि उसके दूसरी तरफ हैली पैड बना हुआ नजर आया। चार धाम पर जाने वाले हैलीकॉप्टर इसी प्राइवेट हैली पैड से उड़ान भरते हैं, जो कि नदी के समीप ही तलहटी में बना हुआ था। इसके साथ ही उगते हुए सूरज की सुनहरी किरणों का प्रतिबिम्ब भी हमें नीचे पानी पर पड़ता हुआ नजर आया। लेकिन आसमान का सूर्य अभी पहाड़ के पीछे हमारी आँखों से ओझल था। तभी लकड़ी के बने अत्यंत प्राचीन पहाड़ी घर नजर आये और जागते हुए इंसानों की चहल-पहल और उन का स्वर भी सुनाई देने लगा। ये घर सारे पुराने और सिर्फ लकड़ी से बने हुए थे, जिसमें जोड़ने के लिए कीलों का नहीं, लकड़ी की ही पतली खपच्चियों का इस्तेमाल किया गया था। ठंड और बर्फ में ये घर गर्म रहते हैं। पहाड़ की ढलान पर सीढ़ीदार खेत बने हुए थे, जिनकी बाउंड्री पर पेड़ों के साथ पत्थर की दीवार बनी हुई थी। किसी राहगीर से पूछने पर पता लगा कि मुखबा गाँव यहाँ से अभी काफी दूर है तथा रास्ते में 'लैंड स्लाइड' यानी भू स्खलन होने से रास्ता भी बंद है। सम्भवतः इसीलिए यह रास्ता इतना सुनसान हो रहा है और अब हमारा वहाँ जाना भी मुश्किल है, यह सोच हम वापिस लौट आये।

वहाँ से लौटते हुए मैं कुख्यात और विख्यात दोनों शब्दों पर गौर करने के साथ इस क्षेत्र से जुड़े दो व्यक्तियों के विषय में भी चिंतन कर रही थी। पहाड़ी राजा का तो नामोनिशाँ नहीं रहा था वहाँ, किन्तु जो व्यक्ति तिब्बत से खच्चरों की पीठ पर लाद कर बौद्ध धर्म की पाली में लिखित पुस्तकें लाया था। वे न जाने कितनी अमूल्य धरोहर थीं, जिन के अध्ययन के लिए उन्होंने पाली भाषा सीखी और भारत में पुनः बौद्ध धर्म की विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाई। वास्तव में मध्यकाल में नालंदा के पुस्तकालय में लगाई आग से यहाँ का ज्ञान कोष पूरा विनष्ट हो चुका था। नालंदा के ही बहुत से भिक्षु अपने साथ पुस्तकों को लेकर एशिया के अन्य देशों में चले गए थे। इसी कारण घुमक्कड़ी प्रवृति के श्री राहुल सांकृत्यायन जी चार बार तिब्बत गए और जो जानकारी भारतीय पटल से लुप्त हो गयी थी, उसे साहित्यिक जगत के सम्मुख पुनः प्रकशित किया। चाहे वह बौद्ध धर्म के विषय में हो या कि लुप्त सरस्वती नदी के बारे में। छत्तीस भाषाओं के जानकार इस इतिहासविद और बौद्ध धर्म के ज्ञाता और प्रकांड पंडित को बाद में काशी पंडितों ने 'महापंडित' की उपाधि दी। एक तरह से हमारा वहाँ जाना और काव्यगोष्ठी करना, वहाँ 'महापंडित' जी के प्रति भी हमारा पूज्य भाव ही था। मैं यह भी सोच रही थी कि अगर पर्यटन की दृष्टि से यहाँ विकास हो तो? क्या सचमुच यह स्विट्जरलैंड को भी मात दे देगा या फिर कुछ और ही हो जायेगा? यधपि विकास के नाम पर हर्षिल वही पौराणिक ग्राम है, किन्तु आज जिस 'रेड डिलिशिस' या गोल्डन डिलिशिस सेब की मांग देश-विदेशों में है, उस मशहूर सेब की पहली पौध इस क्षेत्र में अंग्रेजी सेना छोड़ने वाले भगोड़े विलसन द्वारा ही लगाई गयी थी।

A 1@7 Mianwali Nagar]
Paschim Vihar]
Delhi &110087
Mobile No& 8860022613

मखमली अहसास

प्रो. नव संगीत सिंह

बेटी रूही सिंह

जनवरी के महीने में उस दिन (18 जनवरी) बहुत ठंडी हवा चल रही थी। सुबह करीब चार बजे मैं अपनी पत्नी को स्कूटर पर बैठाकर पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला (तब मैं अपनी पत्नी के साथ विश्वविद्यालय आवासीय परिसर में रह रहा था) के पास क़स्बा बहादुरगढ़ में स्थित गुरू तेग बहादुर की स्मृति में बने गुरुद्वारा पातशाही नवम में ले गया। ओस बूंदाबांदी की तरह गिर रही थी! हालांकि मैंने विंड-शीटर पहन रखा था, लेकिन मेरा चेहरा और दाढ़ी-मूंछें पूरी तरह भीग चुकी थीं। माता कौशल्या अस्पताल की वरिष्ठ महिला चिकित्सक डॉ. अमरजीत कौर ने कुछ हफ्ते पहले पत्नी की जांच की थी और डिलिवरी का दिन/समय बताकर जरूरी निर्देश दिए थे।

बहादुरगढ़ गुरुद्वारा में मत्था टेकने के बाद हम दोनों सुबह छह बजे सीधे अस्पताल पहुँचे। मैंने अस्पताल में एक निजी कमरा लिया और अपनी पत्नी को भर्ती कराया। हम घबराए हुए तो नहीं थे, लेकिन फिर भी एक तरह का 'डर' था। पता नहीं सब कैसा होगा... और मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे, संतान के सुखद आमद की। हमारे दोनों के मन में ऐसी कोई बात नहीं थी कि बेटा होगा या बेटी। हाँ, लेकिन यह जरूर चाहा था कि सब कुछ सुचारू रूप से हो जाए, बिना किसी परेशानी के....।

शाम करीब पाँच बजे पत्नी को प्रसव कक्ष में ले जाया गया, मैं बाहर अकेला था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैंने चौपई साहिब के पाठ शुरू कर दिए - 'हमरी करौ हाथ दै रछ्छा...।' अंदर पत्नी 'रहिरास साहिब' का पाठ करने लगी थी। (पत्नी ने डिलीवरी के बाद मुझे यह सब बताया)। महिला चिकित्सक, डॉ. अमरजीत कौर, जिन्होंने डिलिवरी की प्रक्रिया को देखना था, को तुरंत घर से अस्पताल बुलाया गया। क्योंकि उनके मुताबिक तो डिलिवरी का समय आधी रात के आसपास था।

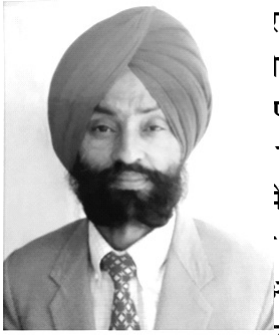

शाम के पाँच बजकर साढ़े सात मिनट पर नन्हीं परी ने इस धरती पर दस्तक दी और जब महिला

... बताया कि बेटी और माँ ...ड़कर भगवान का शुक्रिया ...पने माता-पिता को, जो ... पत्नी के परिजनों को, जो ...ें रहते थे, रात करीब सात ... (मेरे पास तब केवल एक ...गले दिन पत्नी की माँ और ... सुबह-सुबह अस्पताल पहुँच गये, मेरे माता-पिता और बड़ी बहन भी दस बजे तक कोटकपूरा से बस द्वारा आ गए।

मुझे पता था कि मेरी बेटी के जन्म पर कोई मुझे 'बधाई' नहीं देगा, इसलिए मैं नारियल के लड्डू का डिब्बा पहले ही ले आया था। जो भी मुझे मिलता, मैं पहले उसका मुँह मीठा करवा देता, ताकि उसको अपना चेहरा उदास न बनाना पड़े। मुझे खुश देखकर उसको 'बधाई' देनी पड़ती।

मेरी इकलौती बेटी रूही सिंह मेरे जीवन का

गौरव है। उसके आने के बाद से हमने जीवन के हर क्षेत्र में सराहनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। मैंने अपनी बेटी के बचपन में और अब तक जितनी भी कविताएँ रची हैं, उनकी प्रेरणा का स्रोत मेरी बेटी रही है। मेरी हर कविता में चाहे बच्चों की कविता हो, या कोई और, मेरी बेटी का नाम हमेशा लिखा होता है। इसके अलावा, मेरी आलोचना की पहली पुस्तक 'भाई वीर सिंह दा काव्य सिद्धांत," जो 2009 में प्रकाशित हुई, का विमोचन भी मेरी बेटी ने ही किया था।

मेरा मानना है कि यदि माता-पिता बेटी के जन्म को 'ख़ुशख़बरी' के रूप में लेते हैं, तो आपके दोस्त और रिश्तेदार आपको बधाई जरूर देंगे। और यदि माँ-बाप ही बेटी को बोझ समझने लगें तो औरों से क्या उम्मीद की जा सकती है? ऐसा नहीं होना चाहिए कि अगर लड़का पैदा हो तो हम ढोल बजाएँ, डीजे पर झूमें, किन्नरों को नाचने के लिए बुलवाएँ और अगर लड़की पैदा हो तो हम उसे 'पत्थर' समझ कर बेइज्जत करें!

स्नातकोत्तर पंजाबी विभाग,
अकाल विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो-151302
(बठिंडा, पंजाब)
9417692015.

ढोल की थाप पर

-राजेश्वरी जोशी

ढोल की थाप पर, नाच रहा मन,
कोयल की कूक-सा, गा उठा है मन।
आनन्द मग्न हुआ, नाच रहा मन,
ढोल की थाप पर, नाच रहा मन।।

गीत है संगीत है, रीत है, प्रीत है,
गौरिया के मन बसा, सपनों का मीत है।
सपनों के देश में, डोल रहा है मन,
ढोल की थाप पर नाच रहा मन।।

बालों में फूल हैं, आँखें कजरारी,
अंग-अंग नाच रहा, उमंग है भारी।
ताल पर मृदंग की, नाच रहा है मन,
ढोल की थाप पर नाच रहा मन।।

वाद है विवाद है, हर्ष है विषाद है,
प्राणों में ये भरा, कैसा निनाद है।
नृत्य में पीड़ा को, बहा रहा है मन,
ढोल की थाप पर नाच रहा मन।।

सुर भी है ताल है, घुँघरू झनकार है,
महुआ की गंध लिए, स्वप्निल संसार है।
ताड़ी-सा फेनिल हुआ जा रहा मन,
ढोल की थाप पर नाच उठा मन।।

ग्रीनवुड स्कूल, शक्ति फार्म,
सितारगंज (ऊधम सिंह नगर)

हरियाली की भस्म लगाकर

-शिव मोहन सिंह

हरियाली की भस्म लगाकर हम इतराये हैं ।
अमराई में अंगारों के ढेर लगाये हैं ।।

शाम सुबह को लाँघ दुपहरी आग उगलती है।
नागिन बनकर रात निगोड़ी लावा भुनती है।
छिड़क-छिड़क जल छत पर
हम भी सोते आये हैं।।

पीपल के घर सूरज आकर धौंस जमाता है।
बरगद के नीचे बैठा कैक्टस मुस्काता है।
पेड़ों की जीवित लाशें हम
ढोते आये हैं।।

बादल बूँद बयार लगाते आग, अजूबा है।
जलते दिखे अलाव जहाँ पर जंगल डूबा है।
लू के गर्म थपेड़े हमने
बरबस खाये हैं।।

मरघट-सा सन्नाटा फैला मंजुल घाटी में ।
शूल बिछाते-चलना सीखा इस परिपाटी में ।
देख पाँव के छाले हम बस
रोते आये हैं।।

शोकाकुल-सी छाँव धूप को ठौर दिलाती है।
पंछी को श्रीहीन शाख अब राह दिखाती है।
संकल्पों ने अश्रु बहाकर
फर्ज निभाये हैं।।

सूरज है नाराज़

सूरज है नाराज़ आज कुछ, कहना मुश्किल है।
बरस रहा अंगार धरा पर, चलना मुश्किल है।।

छत-नीचे तंदूर जला तो, तड़पा सारा गाँव ।
घिघियाकर अनुदान मांगते, ए सी कूलर छाँव।
लू के लाग-लपेटे में अब, रहना मुश्किल है ।

पूज रहे पनघट के पाहन, समतल पोखर ताल ।
रेत-नदी-तट अनुबंधित हैं, होते रोज हलाल ।
चट्टानों में निर्झर उलझा, झरना मुश्किल है ।

धूल भरी आँधी उपवन का, कर जाती उपहास ।
गुमसुम-गुमसुम-सी लगती है, जीवट-जीती घास ।
हरियाली के हिलकोरों का, हिलना मुश्किल है ।

आग लगाने वालों में है, मौसम का भी नाम ।
हाथ-हथेली हवा दे रही, मारुत है बदनाम ।
भर-भर कूकर दाल चढ़ी पर, गलना मुश्किल है ।

बरगद पीपल नीम नुमाइश, झरते पल्लव आम ।
काले-भूरे मेघों का तन, तर्पण करता घाम ।
साँसों की पूरी गिनती तक, जीना मुश्किल है ।

देहरादून
मो. 9456377578.

कुछ शब्द अनकहे

-राजकुमार जैन राजन

आकांक्षाओं की कीलों से
मेरे सपनों को
ठोंक दिया गया
बेरहमी से
कई प्रश्न
धूमिल अंगारों से
बहती आँधियों से
नित उठते आँखों के सम्मुख
मेरे अबोध मन में
उगे गुलमोहर
केवल समय की अंगुलियों में
लटकते हुए
भविष्य के वैभव ही तो थे

कुछ शब्द मेरे जो अनकहे
इच्छाओं की भीड़ में
खोते रहे, रोते रहे
समय दौड़ता रहा
मेरे मन की निश्चल नदी
बहती रही
जन्मदाता की लालसा
और अर्थ की मृगतृष्णा में
और मेरा अस्तित्व
मेरे लिए ही संकट बन गया

मेरे सपनों पर जड़ी हुई कीलें
अब भी जिजीविषा को
जंग लगा रही है
और मेरे नियंता
क्यों नहीं समझ पा रहे हैं
कि मेरे सपने
अनगिनत प्रश्नचिन्ह बनकर
दरकने लगे हैं
मेरा धैर्य संभावनाओं के
समुद्र में डूबने को आतुर है

फिर भी तुम मौन हो
तुम्हें प्रतीक्षा है
क्या किसी भगीरथ की?
अवतरित करे जो
वह संवेदनाएँ जो
तुम्हारी जड़ता पिघलाकर
कर सके मुक्त मुझे
तुम्हारी आकांक्षाओं से
यही समय का सच है

मुझे उन्मुक्त उड़ने दो
मेरे भीतर एक अनुभूति
जन्म ले रही है
अपने को अपने में ही
झांकने की आकांक्षा की
वह अनुभूति
जो मुक्ति का क्षण हैं
नव सृजन का सम्बल है
तुम्हारी मरुस्थली
आकांक्षाओं का
लहलहाता समुद्र है
निहत्था समर्पण है
जो अक्षय वट वृक्ष बन
देगा सबको छाया।

चित्रा प्रकाशन
आकोला . 312205 (चित्तौड़गढ़) राजस्थान
मोबाइल. 9828219919
मेल. तंरानउंतरंपदतंरंद/हउंपसण्बवउ

औलाद -शुचि 'भवि'

औलाद की तरह ही हैं न
जिनके बिना जीना नामुमकिन है.....

सुनो!
चलोगे मेरे साथ
उस माँ से मिलने
जीवन को जो जीना जानती है?
तो क्या हुआ
बच्चों को बड़ा कर बड़ा बनाते तक
झुकते-झुकते कुछ इतना झुकी वो
कि अब कड़छुल तक पहुँचने के लिए भी
उठना होता है उन्हें थोड़ा सा...
मिलोगे क्या तुम भी उस माँ से
जिसने बच्चों के मन में ख़्वाब भरे थे कभी
ऊँचा उड़ने के?
और उनकी आँखों की गहराई में डूब कर
पूरे भी किए थे वो सारे स्वप्न
क्या हुआ कि उन सपनों में
अपनी मोतियाबिंद वाली आँखों की
जगह ही न बचाई.....
बोलो भी
मिलोगे क्या उस नारी से?
जिसने सीखा स्मार्ट फ़ोन पर
बस उतना ही स्मार्ट बनना
जितने में विदेश में पैदा हुए
पोते-पोती, नाती-नतिनी का बचपन
वो जी सके घर बैठे
अपने बुढ़ापे के साथ....
सुनो!
उस अम्मा ने मुझे कहा था पिछली बार
कि
मैं ज़िंदा हूँ
यह प्रमाण घर आकर ले जाया करो
पेंशन के पैसे,

बी-512, सड़क 4
स्मृति नगर
भिलाई, छत्तीसगढ़-490020
चलभाष 9826803394
मेल shuchileekha@gmail-com

पेड़ ज़रूरी है -अभिषेक जैन

मैं भी लिखना
चाहता हूँ
बसंत पर
कोई कविता
जिसमें मौजूद हों
ढेर सारे पेड़
जिन पर
नहीं चलाईं गई हो
कभी आरियाँ।

नहीं काटा गया हो
किसी के लिए
और चाहिए ही
है आदमी के लिए पेड़
क्योंकि पेड़ ज़रूरी है
तभी तो बसंत आएगा
और नन्हें पौधे भी
कभी न कभी
पेड़ होकर
बसंत का स्वागत करेंगे

-संजय चौराहा,
विद्यासागर रेडियो हाऊस,
पथरिया दमोह, मध्यप्रदेश-470666

माँ हारती नहीं

माँ की कोख जब
भरने को थी
मैंने प्रवेश किया
माँ के ओरा में
जब मन करता
बाहर टहल भी लेता।

चार माह का गर्भ
तब बह जाने का
समय आ गया,
अपने कर्मों का समय पूरा हुआ।

गर्भ से निकल गया
माँ की कोख
खाली कर दी,
नियति के चलते
एक कोख पुनः चुनी
कर्मों के अनुसार
इस बार समय लंबा है,
मुझे जन्म लेकर
कुछ समय
माँ का साथ मिलना है।

बाल सुलभ
अठखेलियों से
घर और मन
उत्सव से भर देना है।
घर का केंद्र बिंदु बना भी
किंतु यह क्या?
समय आ गया जाने का,
किन्तु अब तो जाने का
मन ही नहीं।
नियति के लिखे को
कौन मिटा पाया है
माँ की गोद
हो गई पुनः खाली।

बार-बार माँ पर करते वार पर वार
कुदरत थकती भी नहीं
और माँ हारती भी नहीं।

जी-48, फारच्यून ग्लोरी
-8, एक्सटेंशन, रोहित नगर
बाबडियाँ कला, द्ध नियर जानकी
हास्पिटलऋ भोपाल
म. प्र. 462039

आज का दौर

घुट-घुट कर
सब जी रहे हैं आज के दौर में
टूट रहे हैं
सब अरमान पल-पल
बिछुड़ गए अपनों से
भटक रहे सपनों में
सब इंसान
वो यादें,
वो वादे,
वो फरयादें,
वो शिकवे,
वो शिकायतें,
वो खुशियाँ,
वो रुसवाईयाँ,
देखो ---
वक़्त ने भी तन्हाई में
कभी हँसाया
और कभी रुलाया है।

लिप्पा हाउस, पैट्रोल पम्प,
विकास नगर, शिमला (हि. प्र.)
मो. 9816002201

रमेश डडवाल की दो ग़ज़लें

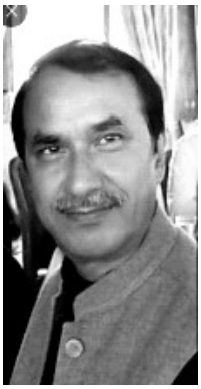

तुम्हारी आँखों से बहता दरिया, हमारे दिल को रुला रहा है
जो जल रही है अगन विरह की, हमें भी उसमें जला रहा है

कि काँपती है ये रूह जिसमें, अजब सा कोई ये जलजला है
लहू के आँसू रुलाये सबको, ये कैसा जादू ये क्या बला है

ये इश्क की है गिरफ़्त कोई, सभी को जो बरगला रहा है
जो जल रही है अगन विरह की, हमें भी उसमें जला रहा है

जो जख्म हैं न कुरेद उनको, तू छोड़ दे तो वो खुद भरेंगे
चराग़ हैं जो समय समय पर, जला करेंगे बुझा करेंगे

तू छोड़ किस्सा यूँ खंडहरों में, नया दिया क्यों जला रहा है
जो जल रही है अगन विरह की, हमें भी उसमें जला रहा है

सवाल खुद ही जवाब बन कर, तुम्हारी नींदों में आ पड़ेंगे
कभी कभी वो बवाल बन कर, तुम्हीं से दिन में भी आ भिड़ेंगे

तू आसमाँ का है चाँद खुद को, यूँ धूल में क्यों मिला रहा है
जो जल रही है अगन विरह की, हमें भी उसमें जला रहा है

तुम्हें जो जी भर के चाह रहे हैं, वो तेरी खातिर न मर सकेंगे
कज़ा जो आयी तो देख लेना, न कुछ किया है न कर सकेंगे

नहीं है आँखों में नींद गर तो, तू गा के लोरी सुला रहा है
जो जल रही है अगन विरह की, हमें भी उसमें जला रहा है

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, शिमला हि. प्र

मोहब्बत तू सच में सयानी बड़ी है
तू टूटी मग़र सर उठा के खड़ी है

समझनी है मुश्किल तेरी ये कहानी
जो हम जान पाये तू उस से बड़ी है

गये छोड़ कर वो तो लौटे नहीं हैं
इन्हें छोड़ जाने की जल्दी बड़ी है

वो हँसते हुए यूँ ख़फ़ा हो गये हैं
हमारी तो बस जान पर आ पड़ी है

सभी कुछ मोहब्बत को थे मान बैठे
मोहब्बत से ही मात खानी पड़ी है

सरकती गयी ज़िन्दगी हाथ से यूँ,
समझते रहे अब तो बरसों पड़ी है

सदा मुस्कराना तू दिलशाद रहना
दुआ दे रहा हूँ विदा की घड़ी है

कभी हमने ऐसा तो सोचा नहीं था
जो कहनी नहीं थी वो कहनी पड़ी है

मणिपुर के नुपी लाल (नारी-संघर्ष) में हिजम इराबत का योगदान

-डॉ. येंखोम हेमोलता देवी

मणिपुर सन् 1891 के पहले राजा द्वारा शाससत एक स्वतंत्र देश था लेकिन खोङजोम युद्ध में भीषण हार का सामना करने के बाद ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया था। जैसाकि अक्सर युद्ध में जीत हासिल करने के बाद अपनायी जाने वाली दमन नीति के चलते अंग्रेजों के अत्याचार से मणिपुर निवासी जन मानस के जीवन में उथल-पुथल मच गयी थी। अंग्रेजों द्वारा इम्फाल एरिया के कई जगहों को हथियाते हुए वहाँ बसे लोगों को भगाया गया था और इसी दौरान इराबत के माता-पिता को भी अपने जन्मस्थान याइस्कूल पुलिसलेन मणिपुर राइफलस् कॉलोनी छोड़कर शरणार्थी बनकर अपने एक संबंधी प्रसिद्ध मृदंग गुरु श्री हिजम लोकनाथ सिंह के यहाँ नम्बूल मपाल पिशुमथोङ ओइनाम लैकाइ में आना पड़ा था। इराबत के माता-पिता का नाम श्रीमती चोङथाम चनु थम्बालङाङबी देवी और श्री इबुंङोहल सिंह था। शरणार्थी काल के इस विषम, दुःखमय, कष्ट भरे कठोर क्षण में 30 सितम्बर, 1896 को जन नेता हिजम इराबत सिंह का जन्म हुआ।[1] जीपवकोपार्जन के लिए उनके पिता को आवा (वर्तमान बर्मा) जाना पड़ा था लेकिन दुर्भाग्यवश वहाँ से वापस लौटने के कुछ ही दिन बाद वे परलोक सिधार गए। फिर उनकी माँ ने अपनी बेटी का पालन-पोषण करने के लिए लोगों के घर-घर जाकर धान कूटना, बर्तन माँजना आदि कार्य किए। उसके बाद इराबत की बुआ श्रीमती हिजम तनङोल सौगाइजम ओङबी इबेतोन देवी ने माँ-बेटी को अपने साथ ले लिया। लेकिन दुर्भाग्य ने उनका पीछा नहीं छोड़ा, वहाँ भी इराबत की माँ का कुछ ही दिन बाद स्वर्गवास हो गया। उनका फूफा श्री सौगाइजम इबोचौ उस समय मणिपुर स्टेट के दरबारी सदस्य के रूप में कार्यरत थे। इस तरह इराबत को बचपन में कठिन व विषम परिस्थितियों को झेलने के साथ-ही-साथ माँ-बाप की छाया से भी वंचित होना पड़ा था।

मणिपुर के प्रथम नुपी लाल अर्थात् नारी संघर्ष सन् 1904 ई. में घटित हुआ था।[2] यह घटना ब्रिटिश साम्राज्य में लीन होने के बाद ठीक 13 वर्ष के शुरूआती दौर में हुई थी। ब्रिटिश द्वारा मणिपुर को हथियाने के बाद यहाँ की जनता को अनेक कष्ट, दुःख व कठोर अत्याचारों का सामना करना पड़ा था और उसी बीच अचानक साहब के बाँगले में आग लग गयी थी। हालाँकि यह आग असावधानी की ओर तो इशारा करती है लेकिन ब्रिटिश साहबों को इस घटना से संबंधित कोई सुराग़ न मिलने के कारण वे इसका इलजाम इम्फाल एरिया में बसे लोगों को लगाने लगे। यही नहीं, इस दुर्घटना को यहाँ के लोगों द्वारा किए गये षडयंत्र का एक रूप मानते हुए यहाँ की जनता को दण्ड स्वरूप बँगले के सामान का हर्जाना भरवाने का आदेश निकाला गया। साथ ही यह हुक्म भी जारी किया कि नया बँगला बनाने में जितनी भी सामग्री लगने वाली है उस सामग्री की भरपाई हेतु प्रत्येक पुरुष अपने घर से बाँस, इ (एक प्रकार का घास), औजार आदि लेकर आए और साथ ही वे स्वयं निर्माण कार्य भी करें। इस आदेश का पालन करते हुए विवशता पूर्वक पुरुष लोग बँगले के निर्माण कार्य में जुट गये थे तभी मणिपुरी महिलाओं द्वारा इस आदेश का प्रतिरोध प्रदर्शन करते हुए निर्माण कार्य के लिए एकत्रित सारी सामग्री को नम्बुल नदी में बहा दिया गया था। इसी के साथ यह मांग करती हुई आवाज भी उठायी गई कि सही अपराधी को पकड़कर सजा दें।

इसी तरह मणिपुरी महिलाओं ने ब्रिटिश साम्राज्य

के खिलाफ़ जाकर प्रथम बार संघर्ष करते हुए डटकर उनका सामना किया और अन्त में विवश होकर सरकार को अपना आदेश वापस लेना ही पड़ा था। यह घटना मणिपुर के इतिहास में प्रथम नारी संघर्ष के नाम से प्रसिद्ध है।

इस प्रथम नारी संघर्ष की चहल-पहल के बीच केवल आठ वर्षीय इराबत ने भी खुदै (मैतै पुरुषों द्वारा लुंगी की तरह पहने जाने वाला वस्त्र) और शर्ट पहनकर उस भयावह माहौल में बिना किसी डर के डटे रहकर भाग लिया था।[3]

उनके इस मासूम चहरे के पीछे छिपे विप्लवी को देखकर उस दिन उसे ढूँढ़ने निकला व्यक्ति भी अचम्भित हो गया था। इतनी-सी कम उम्र में ही अपनी मातृभूमि के प्रति पनप रहे देशप्रेम की भावना को हम देख सकते हैं ।

द्वितीय नुपी लाल अर्थात् नारी-संघर्ष 12 दिसम्बर 1939 ई. से शुरू हुआ था।[4] यह नारी-संघर्ष तत्कालीन मणिपुर सरकार के विरुद्ध मणिपुर की महिलाओं द्वारा उठाया गया बहुत बड़ा कठिन संघर्ष पग था, जो भारतवर्ष में चर्चित है। यह महिलाओं द्वारा चावल के संबंध में आरम्भ किया गया एक मुद्दा है। इस मुद्दे का संबंध वर्ष 1939-40 के मणिपुर स्टेट एडमिनिसट्रेशन रिपार्ट से है जिसके अनुसार उस वर्ष असमय खूब बारिश एवं ओले गिरने के कारण खेती-बाड़ी में भारी नुकसान का सामना ही नहीं हुआ बल्कि अन्य फसलें भी तहस-नहस हो गई थीं। धान का उत्पादन बहुत ही कम होने के कारण मणिपुरी जनता सिर पर हाथ रखती हुई ऐसी बेबसी, लाचारी व हाहाकार के माहौल को झेल रही थी। तभी ऐसी विषम स्थिति में जनता के पेट पर जानबूझकर लात मारते हुए अधिक लाभ कमाने के लालच में ठेकेदार उस साल होने वाले धान के उत्पादन में आने वाली कमी को भाँपते हुए पहले से ही जनता से धान एकत्रित करके अपने गोदामों में रख चुके थे ताकि ऐसी स्थिति में भी अपने मुनाफ़े को कायम रखते हुए चावल को मणिपुर के बाहर भेजा जा सके। फिर, बाजार में चावल की कमी के कारण दामों में बढ़ोतरी ही नहीं हुई बल्कि खरीदने के लिए भी दुर्लभ होने लगा। इस तरह उस दौरान जनता ने चावल की महँगाई के यथार्थ कष्ट को झेला। इसी बीच लोगों ने मिल में धान पीसना और बाहर भेजने के कार्य पर शिकायत की और फिर, सितम्बर 13 को स्टेट दरबार में यह मुद्दा उठाया गया कि जबतक सरकार की ओर से कोई आदेश जारी न किया जाए तब तक बाहर चावल भेजने पर पाबंदी लगाई जाए पर वह सफल नहीं हुए।[5]

फिर, दिसम्बर के दूसरे सप्ताह तक आते-आते चावल को बाहर भेजने की इस रोक-थाम की गतिविधि में उत्तेजना शुरू हुई। ग्यारह दिसम्बर को दो हजार महिलाओं ने स्टेट दरबार में जाकर तत्काल चावल भेजने के इस कार्य को बंद करने के लिए निवेदन किया। लेकिन उस दिन दरबारी अध्यक्ष मौजूद न होने के कारण फिर अगले दिन आने के लिए कहा गया। तत्पश्चात् महिलाओं ने बाहर भेजने के लिए धान-चावल से लदी हुई गाड़ियों को रोकना शुरू किया। फिर, 12 दिसम्बर के सुबह दस बजे के आसपास लगभग चार हजार महिलाएँ मणिपुर स्टेट दरबार में आ पहुँचीं और अध्यक्ष (टी.ए.शापी)[6] को बाहर चावल भेजने एवं चावल के मिलों पर पाबंदी लगाने के लिए शिकायत की। लेकिन अध्यक्ष द्वारा बताया गया कि अभी महाराज तीर्थ-यात्रा पर नवद्वीप गये हुए हैं और बिना उनके स्वीकृति के कुछ भी नहीं हो सकता यहाँ तक कि चावल भेजना, एजेंट की नियुक्ति और मिल का परमिट भी उनके आदेशानुसार हो रहा है। फिर, उन महिलाओं द्वारा अपनी बात पर लगातार जोर देने पर दरबारी अध्यक्ष कहता है कि वह तो बस महाराज को आज तार करके इसकी सूचना दे सकता है। तब महिलाओं ने निश्चय किया कि सारी सूचनाओं को जब तक महाराज को तार करके नहीं भेजा जाएगा और साथ ही महाराज का कोई निश्चित आदेश नही मिलेगा तब तक वे वहीं ठहरेंगी अर्थात् जगह से कतई नहीं हटेंगी साथ ही दरबारी अध्यक्ष को भी जाने नहीं देंगी। इसी दौरान महिलाओं ने दरबारी अध्यक्ष के साथ उनके रक्षक चौथी असम राइफल्स के कमाण्डेंट मेजर बुलफिल्ड

एवं सिविल सर्जन मेजर कम्मिन्स दोनों को भी घेर कर रखा था।[7] इस पर सरकारी अधिकारी और महिलाओं के बीच कहा-सुनी हुई। परिणामस्वरूप ब्रिटिश कमाण्डेंट मिस्टर बुलफिल्ड के कमान के तहत बहुत से सिपाही अपने हथियारों के साथ पूरी तैयारी करके जैसे किसी भीषण युद्ध का सामना करने के लिए निकले हों, उन निहत्थी महिलाओं के सामने आ पहुँचे।[8] फिर, डबल बेङ्गुन की आवाज के साथ ही सिपाहियों ने महिलाओं पर लाठी चार्ज एवं संगीनों से हमला शुरू किया। नि:शस्त्र एवं शांतिपूर्वक पेट की भूख की माँग कर रही उन महिलाओं पर तनिक भी दया न दिखाते हुए क्रूरतापूर्वक पीटना यहाँ तक कि उनको जूता बूट से मसला भी गया। इस भयंकर आक्रमण से घटनास्थल पर यानी टेलिग्राफ ऑफिस के प्रांगण में इस प्रदेश की महिलाओं को लहूलुहान किया गया और इसमें 25 महिलाएँ तो बुरी तरह घायल हो गई थीं। ऐसी भयंकर स्थिति में भी साहस के साथ खड़ी होकर नेतृत्व करने वाली महिलाओं में श्रीमती तोङ्मि सबी देवी, रजनी, कुमारी, लैबाक्लै एवं सनातोम्बी आदि हैं । उस दौर के मणिपुर पुलिस इन्सपेक्टर खोमद्राम धनचन्द्र ने सबी की छाती पर लात मारा और जब वह गिर गई तब भी अपने जूते से बार-बार लात मारता रहा।[9] इसी प्रकार द्वितीय नुपी लाल का संबंध 12 दिसम्बर को टेलिग्राफ ऑफिस में घटित इस घटना विशेष से है। इस संघर्ष में मणिपुरी जनता, विशेषकर नारियों ने अंग्रेजों के क्रूर नीति व अत्याचार के कारण पनप रहे असन्तोष और क्रोध की लहर को डटे रहकर वीरांगना स्त्री की भाँति सामना किया। इस प्रकार 12 दिसम्बर, 1939 को मणिपुरी महिलाओं ने सामाजिक, आर्थिक तथा मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए पुन: अग्र पंक्ति में आकर निडर होकर सामना किया। उनके इस बलिदान को याद करते हुए आज भी राज्य स्तर पर हर साल 12 दिसम्बर को 'नुपी लाल' दिवस मनाया जाता है।

इस द्वितीय नारी संघर्ष के शुरुआती दौर में इराबत मणिपुर के बाहर कछाड़ में एक बड़ी सभा में शामिल होने के लिए गयी हुई थी। हालाँकि यह संघर्ष उनके कई समय के प्रयत्न के बाद की उपज था। मणिपुर स्टेट दरबार अर्थात् 'सरकार' ने सोचा था कि बाहर चावल भेजने पर पाबंदी का आदेश जारी किए जाने पर यह नारी संघर्ष अपने आप शांत हो जाएगा परंतु इसके विपरीत यह संघर्ष दिन-ब-दिन गंभीर रूप धारण करता चला गया। फिर, स्त्रियों व महासभाओं की तरफ से इस संघर्ष का नेतृत्व करने के लिए इराबत को टेलिग्राम भेजकर कछाड़ से जल्दी वापस बुलाया गया। फिर, वर्किंग कमेटी ने सभा का आयोजन किया और उनके मेम्बरों के बीच मतभेद उत्पन्न होने के कारण महासभा के वर्किंग कमेटी में अल्पमत वाले सदस्यों की एक बैठक इराबत के घर में हुई थी। उसी बैठक में इराबत ने भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ़ चल रहे स्वाधीनता आन्दोलन से लोगों को अवगत कराते हुए यह कहा कि हमें भी इस मौके का फ़ायदा उठाना चाहिए। उभरती स्थिति को परखते हुए तुरंत एक पब्लिक बैठक करायी गयी जिसमें उन्होंने नारी संघर्ष का प्रोत्साहन करते हुए एक लंबा भाषण भी दिया था। इस सभा में लोगों ने एकमत होकर नारी संघर्ष का निर्देशन करने के लिए इराबत की अध्यक्षता में प्रजा सम्मेलनी नामक एक विप्लवी दल की स्थापना की। उसके बाद महिला सम्मेलनी की स्थापना करते हुए वे ब्रिटिश सम्राज्य के खिलाफ़ लगातार संघर्ष करती रहीं। इराबत के नेतृत्व में उस समय मणिपुर में स्थित 18 मिलों को आन्दोलन के फलस्वरूप जड़ से उखाड़ फेंका गया, बाहर चावल भेजना बंद किया गया और इस कार्य में जनता विजयी हु ई।[10] इस नारी संघर्ष को काबू में लाने के लिए तत्कालीन सरकार ने सीआरपीसी धारा 144 जारी की और लोगों के जमघट पर पाबंदी का आदेश निकाला। फिर भी, इसका कोई असर दिखाई न देने पर अंत में यह दृढ़ निश्चय किया कि इस नारी संघर्ष को दबाने का एकमात्र रास्ता इराबत को पकड़ना ही है। फिर इराबत को सन् 1940 में अंग्रेजों के खिलाफ़ एक पब्लिक बैठक में भाषण देने के जुर्म में हिरासत में लिया गया।[11]

इसी तरह हम देख सकते हैं कि हिजम इराबत का जीवन विषम परिस्थितियों से होकर गुजरा है। बचपन से ही उनके स्वभाव में विप्लव की झलक दिखाई देती है तभी तो उन्होंने अपनी मातृभूमि के दुश्मनों का प्रतिरोध प्रदर्शन करते हुए एक पत्थर ही सही उठाकर फेंकने की हिम्मत का प्रदर्शन किया। इराबत ने नुपीलाल को साकार रूप प्रदान करने में अहम भूमिका निभायी है। इराबत के जीवन काल में घटित घटनाक्रम में द्वितीय नारी संघर्ष ही एक ऐसी घटना है जो मणिपुरी समाज में हो रहे अत्याचार, गंदगी से भरी सतह जिसमें पैर रखने के लिए जगह शेष नहीं थी, उन सभी को जिस तरह बाढ़ आने पर सब गंदगी अपने में समेटकर बहा ले जाती है, वैसे ही समाज में एक नया परिवर्तन लाते हुए भविष्य में हमारे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति में एक नया परिवर्तन लाने में नारियों के दायित्वों की याद दिलाती है। इराबत ने नारी संघर्ष के इस इतिहास को सदैव लोगों के दिलों में बरकरार रखने का संदेश दिया है। अतः इस संबंध में 'इमागी पूजा' (माँ की पूजा) नामक उनकी कविता से निम्न पंक्ति देख सकते हैं।[12]

ङसि अहिङ लेल्ले,
नुमिट् अमा चटखे,
शम पुनशिल्लु देवी
इफा फारिबदो ।
दिसेम्बर 12 अमा हौखे,
दिसेम्बर 12 अमा लाक्ले,
काउब्रा?
थाजब्रा शम पुनगनि हायबा?
निङब्रा नुमिट् असि लाक्कनि हायबा?

(अर्थात् आज रात बीत गई, एक दिन चला गया, बाल बाँधो देवी जो बिखरे हुए हैं। एक 12 दिसम्बर चला गया, एक 12 दिसम्बर आ गया, भूल गए हो क्या? क्या विश्वास था बाल बाँध पाएँगे? क्या कामना की थी इस दिन के आने की?)

सन्दर्भ-

1. सोयाम छत्रधारी सिंह, मणिपुरगी इतिहासता इराबत, सोयाम पब्लिकेशनस्, काङबम लैकाइ, इम्फाल-795001, मणिपुर, प्रथम संस्करण 1972, पृ.2 ।

2. वही, पृ.3 ।

3. वही, पृ.4 ।

4. उपरोक्त वही, पृ.53 ।

5. लाङ्गोन इबोयाइमा, इराबतः मीट्येङ अमा, एपोल्लो लाङ्गोन्जम (नोहाखोलगीदमक), मोङशाङ्गै नम्बूल मपाल, इम्फाल- 795003 (मणिपुर), प्रथम संस्करणः सितम्बर 29, 2008, पृ. 66 ।

6. वही, पृ. 67 ।

7. उपरोक्त वही ।

8. सोयाम छत्रधारी सिंह, मणिपुरगी इतिहासता इराबत, सोयाम पब्लिकेशनस्, काङबम लैकाइ, इम्फाल-795001, मणिपुर, प्रथम संस्करणः 1972, पृ.54 ।

9. लाङ्गोन इबोयाइमा, इराबतुः मीट्येङ अमा, एपोकलो लाङ्गोन्जम (नोहाखोलगीदमक), मोङशाङ्गै नम्बूल मपाल, इम्फाल- 795003 (मणिपुर), प्रथम संस्करणः सितम्बर 29, 2008, पृ. 67 ।

10. मोइराङथेम राजेन्द्र सिंह, अनौबा मणिपुरगी लमयानबा अहुम, मणिपुर साहित्य समिति, थौबाल, मणिपुर, प्रथम संस्करणः अक्तूबर 1, 2006, पृ. 10 ।

11. सोयाम छत्रधारी सिंह, मणिपुरगी इतिहासता इराबत, सोयाम पब्लिकेशनस्, काङबम लैकाइ, इम्फाल-795001, मणिपुर, प्रथम संस्करणः 1972, पृ.56 ।

12. लाङ्गोन इबोयाइमा, इराबतुः मीट्येङ अमा, एपोल्लो लाङ्गोन्जम (नोहाखोलगीदमक), मोङशाङ्गै नम्बूल मपाल, इम्फाल- 795003 द्धमणिपुरऋ, प्रथम संस्करणः सितम्बर 29, 2008, पृ.72 ।

इम्फाल, मणिपुर
मोबाइल नं. 8131948077

दस्तक देते रहना

-डॉ. बसन्ती मठपाल

पुस्तकः- दस्तक देते रहना
लेखकः- पवन शर्मा
प्रकाशकः- सवेरा पब्लिशिंग हाउस
4754, आकर्षण भवन, 23 अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ल-110002
पृष्ठ-120
मूल्यः- 199/-

'दस्तक देते रहना' प्रिय अनुज पवन शर्मा का एक सुंदर 'माहिया' संग्रह है। मनभावन छंद 'माहिया' पंजाबी लोक साहित्य का अत्यंत मधुर व लोकप्रिय छंद है। शादी-ब्याह, तीज-त्योहार और अन्य शुभ अवसरों पर यह ख़ूब गाया जाता है। पंजाब में 'माही' और 'बालो' दो प्रेमी थे, माही के नाम पर ही इस छंद का नाम 'माहिया' पड़ा। यह तीन पंक्तियों का छंद है। जिसके प्रथम व तृतीय चरण में 12-12 मात्राएँ और द्वितीय चरण में 10 मात्राएँ होती हैं। तीनों पंक्तियों में द्विकल का प्रयोग इसके सौन्दर्य को द्विगुणित कर देता है। मूलतः माहिया शृंगारिक अभिव्यक्तियों का छंद है, पर कालान्तर में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, प्राकृतिक, दार्शनिक भावानुभूतियाँ, पहेलियाँ व अंत्याक्षरी भी इसका विषय बने हैं।

'दस्तक देते रहना' माहिया-संग्रह प्रेम, शुचिता, आशा, आस्था, संघर्ष, समर्पण, भाईचारा, दार्शनिकता, बाल्यावस्था, उदात्त प्रकृति, राजनीति, अवसरवादिता, सच्चरित्रता जैसे भावों को व्यक्त करते माहियों का श्रेष्ठ संग्रह है, जो जीवन, मन, मेरा देश, प्रेम, प्रेरक, होली, भक्ति, सुख-दुख, प्रकृति व विविध शीर्षकान्तर्गत संकलित हैं। इन माहियों में प्रेम की रसधार, जीवन की समरसता, जटिलता और विद्रूपताओं के साथ मानवीयता, प्रकृति, भक्ति-भाव के सरस संदेश समाहित हैं।

पुस्तक खोलते ही समर्पण में भारत माता का चित्र और नीचे लिखा-यह उन्हें समर्पित है/ जिनका तन-मन-धन/ भारत को अर्पित है। यह समर्पण मातृभूमि के प्रति कवि की प्राथमिकता दर्शाता है। आज हम जिस काल-खंड में रह रहे हैं, उसमें घर-घर वैमनस्य व अशांति का साम्राज्य है। मतभेद-मनभेद बन सम्बन्धों को खोखला कर रहा है। यह विश्व तो कर्म की प्रधानता को पुरस्कृत करता है।

मन शीर्षक के अन्तर्गत संकलित माहियों में मन का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। भेद-बुद्धि रहित जीवन सजा-सँवरा रहता है। अपने मन को मजबूत करें, जो किसी से नहीं कह सकते एकान्त में अपने मन से कहें, मरे मन से जीवन रण में विजय नहीं पायी जा सकती। मन का परिष्कार भी आवश्यक है। कलुषित मन जीवन को अंधकार से भर देता है। विष बुझी मीठी बातें पहचानना सीखें। अन्तर्मन में झाँकते रहने से अंतःचक्षु उन्मीलित हो जाते हैं। आशावादी मन तन की विश्रांति के पश्चात भी आगे बढ़ने को ललकता है। मन को सत्य-पथ का अग्रिम पथिक बनायें। मन प्रसन्नचित्त होगा तो उसकी कान्ति से तन भी आभायुक्त हो जाएगा। किसी भी प्रकार के भ्रम न पालें। स्वप्नदर्शी बन नित नए अनुसंधान करें। तन की मलिनता से मन की मलिनता कई गुना घातक होती है- ''जिसका मन मैला है/वह मैले तन से/ सौ गुना विषैला है।'' हृदय की दृढ़ता के आगे बड़े से बड़े तूफान थम जाते हैं। लोकानुसरण करने से अच्छा होगा कि मन का अनुसरण करें। मन तभी सुखी व संतुष्ट

होता है जब उसे शबरी के राम सम अपने आराध्य मिल जाते हैं। हमारी महान ऋषि परम्परा ने हमें अपने मन का संधान करने के रास्ते दिखाये हैं, इसके लिए हमें प्रयासरत रहना चाहिए। मन से मन का मिलना ही सच्चा मिलन है। सांसारिक मोह-माया को छोड़ हम सत्यपथ के गामी बनें। मन प्रसन्न तो तन भी स्वस्थ व सुन्दर होगा- ''मन-पंछी चहकेगा/ तब ही तो मितवा/ तन तरुवर महकेगा।''

कवि का उपयोगी संदेश कि मन अनेक बार असमंजस में होता है, ललचाता भी है पर ये भी नहीं समझाता है कि लालच बुरी बला है। मन को अडिग व मजबूत बनाये रखें, मन से निकली बात अत्यंत प्रभावी ढंग से सामने वाले के मन में उतर जाती है। मधुर संभाषण एक ऐसा अस्त्र है कि सारे संशय मिटा कर हृदयों को जीत लेता है। आपका मन प्रेम में पगा हो तो उसकी सुगंधी से सारा परिवेष महक उठता है। सुखी होना चाहो तो मन के भेद किसी से न कहो, स्पष्टवादिता सामने वाले की सोच को विकृत होने से रोक सकती है। आप यदि मन को बाँचना सीख जाओ तो हर हृदय में पीड़ा का अनन्त सागर मिलेगा। वर्षा ऋतु में यही मन संयोग में प्रसन्नता व वियोग में अधीरता की अनुभूति कराता है। धैर्यपूर्वक बुजुर्गों से मन की बात होनी चाहिए, तभी घर-परिवार में सुख, शान्ति, संतोष व सम्पन्नता आती है। कष्टकारी समय मन को बहुत व्यथित करता है। मन का मंथन होता रहे तो जीवनामृत प्राप्त होता है। ''अमृत उसने पाया/ मन के सागर को/ जो नित मथता आया।'' बाहर तूफान विनाशक होता है पर मन का तूफान महाविनाशक होता है।

'मेरा देश' शीर्षक के माहिये देश को समर्पित हैं। हमारे महान देश ने विश्वबंधुत्व व विश्वमानवता की महान अवधारणा विश्व को दी, इसीलिए कवि अपने देश पर गर्व करता है। वह कहता है कि देशद्रोह करने वालों के विरुद्ध कठोर क़दम उठाये जाने चाहिएँ। ''जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी'' इसीलिए कवि तिरंगे का भी बहुत सम्मान देता है, राष्ट्र के सांस्कृतिक विस्तार व वैचारिक गहनता को कवि प्रणाम निवेदित करते हुए कामना करता है कि भारत विश्ववंदित हो, अग्रगण्य हो। वीर भारतीयों का सामना करने से शत्रु सदा बचता आया है। शस्त्रों से नहीं, शास्त्र व प्रेम से हमें विश्वविजय करनी है। मातृभूमि पर बलिदान होने वाले देवत्व को प्राप्त करते हैं। देश में यदि शांति भंग का प्रयास किया गया तो सारे क़लमजीवी देश रक्षा हेतु शस्त्र उठाने से न हिचकेंगे। ''वो देश जलायेंगे/ तो हम छोड़ क़लम/ बन्दूक उठायेंगे।

'प्रेम'- शृंगार माहिया का मूल रस है। प्रेम शीर्षक के अन्तर्गत संकलित माहिये प्रेमाभिव्यंजना की सूक्ष्मताओं से सज्जित है। जहाँ संयोग व वियोग दोनों की प्रभावी अभिव्यक्तियाँ आपको मिलेंगी। प्रेम एक ऐसा गहन व व्यापक भाव है जिसकी साधना में महाकाव्य लिखे गए हैं। यहाँ तो 65 माहिये ही हैं। प्रत्येक माहिया प्रेम की एक नई भंगिमा लिए हुए है। सर्वप्रथम कवि ने माही-बालो का पुण्य स्मरण किया है, जो प्रेम के प्रतीक हैं, यहाँ प्रेम की अनेक छवियाँ हैं समाज, परिवार, संतति, देश, मित्रता के प्रति प्रेमभाव की अभिव्यक्ति है। कवि कहता है कि ये दुनिया प्रेम की शत्रु नहीं है। प्रेम में प्रियदर्शन व मिलन की लालसा सदा बनी रहती है। परदेसी प्रिय घर आ जाय तो सारा सदन दीपावली से जगमगाने लगता है, क्योंकि प्रेमी केवल अपने प्रिय का साथ चाहता है। प्रेम में हारकर ही जीत होती है। जो हृदय प्रेम में रंग गया हो वह सांसारिक सुख-दुख से असम्पृक्त रहता है। विरह की एक अवस्था यह भी आती है कि प्रेमी को प्रिय बिना जीने की आस नहीं रह जाती। जो हमें प्रेम करें वही हमारे सच्चे हितैषी होते हैं। प्रिय का कनखियों

से देखना प्रेमी के जीवन का लेखा-जोखा बदलने के लिए पर्याप्त होता है। जो मन में समा चुका हो उसके अपना होने में सन्देह नहीं होना चाहिए। मिलते-जुलते रहने से प्रेम बढ़ता है और इस अपनत्व के द्वार खटखटाने की औपचारिकता व्यर्थ है- ''सीधे अन्दर आना/ अपनापन है तो/ फिर द्वार न खटकाना।''

परिवारिक ख़ुशहाली का आधार भी पारस्परिक प्रेम ही होता है। जो प्यार में सताता है उसी पर सर्वस्व न्यौछावर करने की चाह जागती है। मन में बसी मूरत सामने आ जाये तो सम्पूर्ण परिवेश विहँसने लगता है। प्रेम, प्रेम को ही जानता-मानता है, और किसी सम्बन्ध को नहीं, प्रिय मुस्कान से साँसों को विस्तार मिल जाता है, अगणित पुष्प महमहा उठते हैं। प्रेम की रागात्मकता ऐसी कि प्रिय पायल की रुनझुन प्रेमी का हर दुख हर लेती है। प्रेम इतना लाचार कर देता है कि लोक लाज तज प्रिय मिलन का उपक्रम होने लगता है। रूठना-मनाना प्रेम में सामान्य क्रियायें हैं। प्रिय की आँखों की गहराई नापने के प्रयास में प्रेमी उनमें ही डूब जाता है। प्रेम आत्मा को भिगो जाता है। प्रेम पक्का हो तो दूरियाँ रह ही नहीं पाती, प्रियदर्शन मन के पतझर को मधुमास बना देता है। प्रकृति में भँवरों के स्पर्श से कलियाँ चटकने लगती हैं, लता-वृक्ष झूम उठते हैं, सावन की सरस बूँदों में भी प्रिय-छवि दिखाई देती है। कागा बोले तो विरही मन प्रिय आवन की आस में डोलने लगता है- ''मन में उल्लास हुआ/ मतलब साफ सखे/ कुछ तो है ख़ास हुआ।'' इस प्रकार प्रेम-मनुहार, छेड़-छाड़, उपालम्भ, संयोग-वियोग के विरल चित्र आपको यहाँ प्राप्त होंगे।

'प्रेरक' - शीर्षक में छोटी-छोटी प्रेरणादायक व उपयोगी सूत्रों को माहियों में पिरोया गया है। 'होली' पर आधारित माहिये होली की जीवंतता, रंगीनी, भाईचारा, सरसता, उल्लास-उमंग, पुलक, प्रसन्नता व हुड़दंग को समाहित किये हुए हैं।

'भक्ति-भावना' के माहियों में भक्ति का समर्पण, आस्था, तपस्या, त्याग, शाश्वतता और जीवन की नक्वरता, मोह, माया, लोभ-लालच, पाप, सांसारिकता के विषय में बताया गया है। लेखन की भाषा अत्यंत सरल-सहज, प्रवाह-युक्त, मुहावरेदार आम बोल-चाल की है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा की प्रभावोत्पादक कई गुणा बढ़ जाती है। माहियों का भाव पक्ष अत्यंत गंभीर व विस्तृत है। अगर विश्लेषण किया जाये तो एक पुस्तक तैयार हो सकती है। पुस्तक के सुन्दर मुखपृष्ट के लिए बिटिया मुग्धा को हार्दिक बधाई व आशीर्वाद। इतना प्रतीकात्मक, सजीव आवरण उनकी कल्पना की उपज है। आप रचनात्मकता के क्षेत्र में बड़ा मुक़ाम बनायें। मैं अपने अनुज को पुनः साधुवाद व बधाई देते हुए उनकी क़लम के कालजयी होने की प्रार्थना परम-पिता परमात्मा से करती हूँ

5/21, वसन्त विहार एन्क्लेव,
पो0- न्यू फॉरेस्ट,
देहरादून

अनूठी कहानियाँ : 'और कितनी परीक्षा'

--प्रो. अवध किशोर प्रसाद

पुस्तकः- और कितनी परीक्षा
लेखकः- आशा शैली
प्रकाशकः- साहित्य भूमि, एन. 3/5 ए, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
पृष्ठ-112
मूल्यः- 395/-

'और कितनी परीक्षा' आशा शैली का कहानी संग्रह है. इसका प्रकाशन साहित्यभूमि, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें तेरह कहानियाँ संकलित हैं. संकलन की कहानियाँ, जैसा कि शैलेश तिवारी ने लिखा है, ''संघर्ष की अविराम कहानी है और कितनी परीक्षा, जिसमें लेखिका की कलम ने तूलिका बनकर आम आदमी के दर्द को संग्रह के कैनवास पर विभिन्न रंगों से चित्रित किया है'' संकलित कहानियों के अवगाहन से इस कथन की सत्यता प्रमाणित होती है।

संकलन की पहली 'पहचान' परिवार के विघटन पर कृतघ्न संतति की कहानी है। अपने इकलौते पुत्र भानु के लिए सर्वस्व का त्याग करने वाली माँ उर्मिला को भानु से दुःख और दर्द ही मिलता है। वह माँ के विरुद्ध केस करता है, किन्तु जज अपनी पारखी दृष्टि से नीर-क्षीर विवेक कर उर्मिला को न्याय देता है। कहानी में माँ की ममता, पुत्र की कृतघ्नता एवं एक जज की पारखी दृष्टि का सम्यक विश्लेषण हुआ है। 'बटेसर की चक्की' भावनात्मक कहानी है। इसमें माँ के प्रति बेटों के दुर्व्यवहार और बेटी के सामर्थ्य की अभिव्यक्ति हुई है। बटेसर के बेटे उसकी चक्की को बेच देते हैं, किन्तु उसकी बेटी सुमित्रा उसे पुनः खरीदकर न केवल पिता के सम्मान को लौटाती है, बल्कि माँ के लिए जीविका का साधन भी मुहैया करती है। पुरुष की ज्यादतियों के शिकार नारी के भीतर का आत्म-सम्मान जब जागृत होता है, तब पुरुष को मुँह की खानी पड़ती है। 'अंततः' शीर्षक कहानी की नायिका डॉ. रेवा अपने पूर्व पति जय की ढिठाई से तंग आकर उसे तलाक का पेपर भिजवाकर उसके हौसले को पस्त कर देती है। अपना प्रतिकार पूरा कर वह आधी आबादी को यह सन्देश देती है कि 'अन्याय सहना भी अन्याय है, अन्याय का प्रतिकार अपेक्षित है'। बुजुर्गों को नजरंदाज़ कर देने की महानगरीय संस्कृति पर आधारित 'किस्सा एक सिगरेट का' गंभीर भाषा में लिखी गंभीर कहानी है। पिता के सिगरेट पीने की लत पर पिता को सीख देने वाले पुत्र को समझाइश देता पिता अकेले रहने का निर्णय लेकर बेटे और बहू को चौंका देता है। पिता की समझाईश--''औलाद को सुधारना माँ-बाप का काम होता है, न कि औलाद माँ-बाप को गल्तियाँ गिनाने बैठ जाए'' कितना सटीक और कितना सार्थक है। शीर्षकनामा 'और कितनी परीक्षा' द्विब्याहता रंजना की दर्द भरी कहानी है। जब रंजना का पति हादसे का शिकार हो जाता है, तब उसके चाचा उसका पुनर्विवाह करा देते हैं, किन्तु नामर्द पति के साथ उसका जीवन नर्क में तब्दील हो जाता है, क्योंकि अपनी नामर्दी छिपाने के लिए उसका पति उस पर तरह-तरह से अत्याचार करता है। रंजना की यातनापूर्ण जिन्दगी से द्रवित होकर उसके जेठ उसकी सहायता करते हैं और वह अपनी बाल सहेली श्रेया के घर आ जाती है, जिसे वह अपना दुःख-दर्द सुनाती है। कथावाचन की शैली में लिखी यह कहानी पुरुषवादी नृशंसता

तथा नारी की बेचारगी का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। 'अनुत्तरित प्रश्न' एक कलाकार के मन की उलझन की कहानी है। कोई भी कलाकार सफलता की ऊँचाइयों पर चढ़ने के लिए किसी-न-किसी सीढ़ी का इस्तेमाल करता है, किन्तु कभी-कभी गलत सीढ़ी के इस्तेमाल से लाभ के बदले हानि हो जाती है। इस कहानी में कथानायिका तृष्णा की परेशानी का कारण सरिता का कन्हैया के साथ सम्बन्ध है, किन्तु उसका समाधान उसकी सहेली रंजना यह कहकर करती है कि ''उसने कन्हैया को सीढ़ी बनाया, कन्हैया ने उसका इस्तेमाल किया, तुम्हें बेकार का अपराधबोध हो रहा है'' जिसे तृष्णा स्वीकार कर स्थितप्रज्ञ हो जाती है। 'पीढ़ियों का अंतराल' शीर्षक कहानी में पीढ़ियों के बीच की सोच के अंतर को स्पष्ट किया गया है। एक पीढ़ी, पिता नथमल, अपने स्वाभिमान के समक्ष संकट के समय किसी के द्वारा दी जा रही सहायता को सहज स्वीकार करने में हिचकती है, वहीं दूसरी पीढ़ी, पुत्र रामसरन, अपने बेटे के इलाज के लिए मिलने वाली सहायता को पूरी व्यावसायिक सोच के साथ स्वीकार करती है। मानसिकता का यह अंतर यह बतलाता है कि हमारे जीवन से नैतिक मूल्य कैसे तिरोहित हो रहे हैं। 'मुन्ना सो रहा है' मनोविज्ञानिक कहानी है, जिसमें एक माँ की ममता की अभिव्यक्ति हुई है। तीन पुत्रों की मृत्यु पर आहत माँ की गोद में जब एक बच्चा डाल दिया जाता है, तो उसकी ममता जागृत हो जाती है और उसकी विक्षिप्तता समाप्त हो जाती है। 'एक थी लड़की' संवेदनात्मक कहानी है। इसमें गीता की गरीबी का वर्णन किया गया है। गीता की स्थिति संवेदना जगाती है। 'आग्रह' भय, कौतुहल, जिज्ञासा और प्रेम जैसे भावों से संपृक्त कहानी है। इसमें कुन्नू नामक लड़की के माध्यम से माँ की प्रताड़ना, कथानायिका की सहानुभूति और श्याम नामक लड़के के प्रति कुन्नू के प्रेम की भावना की अभिव्यक्ति हुई है। 'पवित्तर अपवित्तर' दलित विमर्श की कहानी है। गाँव के समृद्ध परिवार की बेटी और बहू मीरा दलितों के काम करने के लिए सतत संलग्न रहती है। इसके लिए उसे सवर्णों के विरोध का दंश झेलना पड़ता है, परन्तु वह सबके प्रश्नों का उत्तर देती है और पंचायत के सदस्य की हैसियत से दलितों का काम करती है। इस कहानी में सदियों से कुरीतियों के बंधन में जकड़ी मानसिकता को बदलने की चाहत की अभिव्यक्ति कथानायिका मीरा के सत्प्रयासों के माध्यम से की गयी है।

माँ जिस बेटे को जन्म, जीवन और संरक्षण देती है, वही बेटा उसे गंगा के तट पर छोड़ आता है। उसकी ममता को एक युवक समझता तो है किन्तु उसके लौटने में देर हो जाती है और माँ की ममता गंगा में विसर्जित हो जाती है, 'कहीं देर न हो जाए' एक माँ की ममता के विसर्जन की कहानी है। धार्मिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई संकलन की अंतिम कहानी 'दक्षा दी का श्राद्ध' एक ढोंगी बाबा की कहानी है, जो स्त्रियों के साथ गलत व्यवहार करता था तथा ड्रग्स का सप्लायर और चरस-अफीम का व्यापारी था। सुमेधा बचपन में अपने साथ होने वाले दुराचार के प्रयास का बदला अपनी सहेली के घर प्रवचन देते उस बाबा को पुलिस के हवाले कराकर, लेती है। यह कहानी अंधी श्रद्धा से सचेत करती हुई आडम्बर तथा पाखण्ड की पोल खोलती है।

अनूठी कथावस्तु पर लिखी गई संकलन की कहानियाँ भी अनूठी ही हैं। कहानियों की भाषा में गाम्भीर्य और भाव में कमनीयता है।

डब्ल्यू-ज़ेड-143/4डी., भूमितल,
गली नं. 7, न्यू महावीर नगर,
नई दिल्ली -110018
मो. 9599794129